रससागर

श्री· रसीलेमिश्र कृत·

१९ तरङ्गात्मकः

॥श्री [illegible] यनमः॥ ॥अथ रसीले मिश्रकृत रं
[illegible]नागरलिष्यते॥ छप्पैछंद॥ गौरीनंदन एकदंत लंबो
दर लहि यै॥ चंद भाल गजकर्ण बिकट गज ज्ञान
[illegible] हियै॥ [illegible]पिलो हेरंब चित्र देमज हु बिना
[illegible] विघ्नहर [illegible] नाम काल सब साधक स्पायक
[illegible] पदनगणाधिपति पंथ चलत घरमे वरतं
[illegible] जागण जाग विधि व्याह काज मंगल करत
॥१॥ अथ दशावतार वर्णनं॥ कृदान वसुषद लमत्त
[illegible] गत सागर वरतारण॥ लोकनाथ विस्मयन
द्वंद्व उद्धरमद भंजन॥ नरकपात उद्धरन गोपबाल
कमन रंजन॥ निजभगत रूपचित्त रूपधर पुण्य
अतीत दुर्गम चरित॥ जगवंद देव आनंद नित सुम
तिरसीले गुनरचित॥ २॥ अथ देवीजूकी स्तुति॥
दोहा॥ देवी दीजे कृपा करि कबिताई की रीति॥ उ
क्ति युक्ति बुधि देन कों तु ही जगत की रीत॥ ३॥ यथा
कवित्त॥ षिन ही षिन विध्न त्यों नाद्दन जात बिवेक
बिचार नहीं हटके॥ जिनिकों लषि अंत न दानने
[illegible]सिघि रावत सों सगिने घट के॥ [illegible] सेसब पा
[illegible]कवेत न नेंगिरिराजसुता परसे तट के॥ सिरन्या
[illegible] इद [illegible] करनें [illegible] तिसों जमका गद [illegible] के
॥ [illegible] लीला वर्णनं॥ यथा॥ पेजनके ट

ककटिकिंकिनीकी झनकार एक वार सुनैं कुलक
ननहरतुहै॥ जोरावरी चौं पचाइ पाइनि डगमगा
इ तादरि बिवसम्है कै धरनि परतुहै॥ देत सबै ना
रीयह नाचत बिहँसत उठ माषन के काजें फेर भांव
री भवतुहै॥ लोकनि के लोक रसीलो बालमंड
ली मैं नंद के महरि ऐसे षेलनि करतुहै॥५॥
यथा॥ रे चित चात्रिक बादमैं सठ औसर आ
स किये दुष पैहै॥ गोरस संपति भोगरसीले जे
ग्वालननि कों निज जानि मिलैहै नंदकुमार उदा
र बड़ो प्रभु तो हित दान बिनु आपुन षैहै॥ दान न है
न बद्यो दयो अब दान भए कहा नाज न दैहै॥६॥
अथ केबि वर्णनं॥ छप्पै॥ चतुराननको बस आ
इ जमदगनल षायो॥ जाके गृह आवतार धरें
परमेश्वर आयो॥ परसराम जिहि नाम दान द्विज
राज सुहाए॥ ताके सुत भए पांच पचाधी जान क
हाए॥ तिहिं बंस मुकट वदलभयो साहस भाद
लमल लल स॥ करन कुमडियो भेषधर दान दि
यें दीनन विहँस॥७॥ दोहरा॥ तिनके कुल के
दानज सक बिलाई मन मान॥ जाचक जन को
पूरिबो को करि सकै बषांन॥८॥ दिति मूल के
विदिता जग मूलराज रघुनाथ॥ जिनि के को बता

ईसदातपजसविद्यासाथ॥१९॥मूलराजतनोधर्म
निधिताकोसुतनंदलाल॥जाकेजससाकेप्रग
टरटततगुनीगुनमाल॥२०॥रसकरायतातेंसु
जसबुद्धिबिबेकनिधान॥ताकोसुतकबिकु
लमुकटरसिकरसीलोजान॥२१॥ताकोसुतहरि
चंदपुनिऋषीकेशकबिदास॥इनमेंछोटोजोहु
तोतिनयहकियोप्रकास॥२२॥रिषीकेसकी
सरलताकिहिबिधिसकोंसराह॥रससागर
मेंग्रंथकोजिनिश्रमुकियोनिवाह॥२३॥दोइग्रंथ
भाषारचेरिषिकोचित्तहुलास॥पहलेंरससागर
कियोपुनिरसरतनप्रकास॥२४॥रससागरस
मुझेबिनानहीहोतकविराज॥रसिकरसीलेनें
रच्योऋषीकेसकेकाज॥२५॥कीनेग्रंथअनेक
जिनिभांतिभांतिबिस्तार॥पैरसिकरसीलेचित्त
कोंयहरससागरसार॥२६॥कबिमारगजेसोक
छूतेसोदेहुलषाइ॥जातेंसरसकवित्तकेनी
केजानेंभाइ॥२७॥यहरससागरग्रंथहैकविता
ईकीषानि॥रसिकरसीलेनरनिकोंचाहहरत
नसमान॥२८॥ग्रंथसुगमसाधकअधिकजामें
जुक्तिनवीन॥पढिवेकीतासहलहेसुनेहोत
परवीन॥सत्रहसैसंबतगनेंबहुरतीसपर

चार ॥ भूपति और गजेंब जहँ सब भूपनि को सार
॥ २० ॥ चैत सुदी तिथि अष्टमी जहा अदित सुतवा
र ॥ २१ ॥ अथ मूढक विवर्णनं ॥ कुंडलिया ॥ चख्यो त्रि
दोषी मूढक बिदोतु एक सुभाइ ॥ केहूं हाथ न आ
वही रीते परहि उपाइ रीते परहि उपाइ जाइ रस
भिदै न हीयें ॥ दोष दृष्टि में मगन बकै मद सों वहु
पीयैं ॥ धुनत सीस मुष स्वास नैन न भृकुटी लस
दोषी ॥ दोतु एक सुभाइ मूढक बिचष्यो त्रिदोषी
॥ अथ कपूत वर्णनं ॥ यथा ॥ ऐसो दाढ भावे जा
में बंस को पतन होत और और ढोर सुषपाच
न सों मचे हैं ॥ आंन आंन भांत के बंधे हैं ढिठ
बंधन सों छूटत गोठ बडे पात के सुष चे हैं ॥ जिनि
को निरादर करत लघुता के जगत तिन तिन ही के रू
प सों नके हूं बचे हैं ॥ वारें घन बरसत हर सो बिमु
ष करें ह्वान के करे या नीच दोतु ताक साचे सचे हैं ॥
दोहरा ॥ कर जोरें बिनती करों सुनहु श्रवन दै मी
त ॥ बिनु समुझें हँसीयो मती कवि ताई की रीति
॥ २४ ॥ इति श्रीमत्सारस्वत कुम डियें बंशोद्भव नं
दलाल तस्यात्मज रसक राय तत्पुत्र श्री रसीले
मिश्र बिरचिते रस सागरे कवि वंश वर्णनं ॥ नाम
प्रथमस्तरंग ॥ १ ॥ दोहा ॥ रस समुझे बिन रसिक

नहितातेंनवरसआदि॥बरननत्यातेंभावकोंसब
बिधियेयतस्वाद॥१॥चोपई॥सिंगारहासकबीर
करुणाभयानकधीर॥बीभत्सअद्भुतनाम॥सु
निरौद्रसांतिसुधाम॥२॥दोहा॥एनवरसबरन
तसबेएककहतयहभेद॥दसवोंरसबात्सल्य
पुनिसुनिमाननरसवेद॥३॥जोरसकोस्थायी
सुहृदत्योंबिभावअनुभाव॥यातेनहिबरननसु
बुधग्रंथलहेबिस्तार॥४॥प्रथमधरमतातेंअर
थतातेंपूरनकाम॥यहसुषसबकोंदेतहैनियके
अतिनिजधाम॥५॥रसमैंयहश्रृंगाररससुषको
परमनिधान॥तातेंइहमैंदेतचित्तजेजानतमति
जान॥६॥अथश्रृंगारभेदकथनं॥दोहरा॥जो
कछूमदनप्रभावतेंचितमेंहोतबिकार॥दंपतिश्री
तिनिदानसोंसोकहियतश्रृंगार॥७॥चौपई॥
द्वैतिहिभेदकहतमुनिलोग॥प्रगटहोतसंयोग
वियोग॥तिनमेंगनप्रछन्नप्रकास॥तिनकेप्र
गटतभिन्नबिलास॥८॥जहांतकततरुणीपर
तहांसोंसंयोगहोइसुषलहो॥वेदोऊबिछुरत
हैंजहां॥होतवियोगनामरसतहां॥तरुनीतरु
नसषीजियप्यारी॥इनितेंओरनजाननन्यारी

॥सो प्रछन्न नाम मैं न पावै॥ और न काहू भेद लषावै
॥ जिनि को सब लोग गहि जानैं॥ सो प्रकास के
र चाव बषानैं॥ अब हौं तिन को बरन सुनाऊं॥ जै
सो कछु बुद्धि बल पाऊं॥ ११॥ अथ शृंगार रस को
स्थाई भाव बर्णनं॥ दोहरा॥ पिय प्यारी को रूप ज
हां प्यारी पिय के रूप॥ होत न हां शृंगार रस भाव
दिक को भूप॥१२॥ जथा लहै ती जू को बचन॥ ला
ल जू सों॥ लाल न निहारी सो बनाइ न कहत कछू
चित की लगन जैसी हीये उमहति है॥ रैन दिन ए
को छिनु और देष्यो लागे तिनि ये हे छबि नारे भई
नैन निरहति है॥ असी ते सरस सुंदर सकाहि छ
छो भावै न निहारैं पीनि के सेनि बहति है॥ ऊंचे
लै उसास आंसू भरि हरि ऐसें कह्यो तेरी सो तू
मेरी कहना वति कहति है॥१३॥ अथ प्रछन्न संयो
ग शृंगार बर्णनं॥ दोहरा॥ मन मैं पीय की कामना
मुष सों कही न जाइ॥ लोक लाज गुरु त्रास तें सो
प्रछन्न बनाइ॥१४॥ यथा॥ लाल जू को उदाहर
न॥ काजर सी कारी घटा चहूं ओर घोर घन॥ नर
नल सन सुष बूंदनि बरस को॥ ललित कदंब कुं
ज बेलनि की लपटानि सुषदाई कूल जहां अलिं
दी दरस को॥ विधि को अराधि चारु नैन तन सरीर

पाइ मानो रतिकाम सुष नैनन नए रसकौ।। राधिका
कुंवर नंदनंदन रसीले दोउ गाढे गहि अंक पीयें
आनन सरस कौं।। अथ प्रकास संयोगशृंगार
वर्णनं।। दोहरा।। जहां परस्पर दुहूंसिलदरसपर
ससुषलेत।। चित्त चिंता मिटि जाइ जहां सो प्रका
स सुष देत।। २६।। यथा लाल जू उदाहरण।। राज
ति हैं रति केलिस में हरि राधिका रूप रसीलो सु
हाऐं।। कै परिचारक मान स मैं रसरीति सुभाइ
अनेक दिषाएं।। उज्जल कांति सरीरनि मैं प्रति
बिंब दुहूं के यहै छवि छाये।। प्यारी सों प्यारो सुप्या
री री दिषें बनें नहि बात बनाऐं।।२७।। अथ प्रछन्न
वियोगशृंगार।। दोहा।। जहां पियकें विछुरे सक
ल विना षान पान न सुहास।। मन मैले मैले बस
न सो प्रछन्न प्रकास।। २८।। यथा लडैती जू की।।
मोपै आंगु डारि उर अंचर उसारि पुनि छोरि वा
रि चीर नैंन नारनि नचाइकै।। मुसिकाइ अंड
ति जैं भाइ अधर हि दाब लाल न लषत प्यारी
यों रसीले भाइकै।। मनहूं कौ सेंननि सों चुंबनि
कै अंक भरें पूतरी सी ह्वै गई न हलाचाइकै।।
।। जैसें जोगी जोग में समाइ सुष अनुभवै तैसे मन
आनंद मैं लीन भयो जाइकै।। २९।। अथ प्रकास

वियोगश्रृंगाररसवर्णनं॥ दोहा॥ अरतिअचेनीपीरमुष
स्वासरुदनअपमान॥ उपजतजहांसरीरमैंतेप्रक
सतेज्ञान॥२०॥ यथालडैतीजूकीअवस्था॥ सीत
लवारिसोंचंदनसारसोंलैघनसारसोंपूरभरी
यो॥ पहरबवारिपुरैनप्रचारराषीछपाइप्रसूनन
हीसों॥ चैननपाइमहाबिललाइचलैउठिधाइ
परैसुरछैत्यों॥ नायकेतेजतचेघनकंपपरीतनरैफे
बिफरीसफरीज्यों॥२१॥ अथहास्यरसकोअस्था
ईभाववर्णनं॥ दोहा॥ भूषनबसनसरीरगनिकर
नीहूविपरीत॥ रूपविकृतकारीसबैकरतहास
परतीति॥२२॥ अथलडैतीजू॥ गातसिंगारउ
तारसबैकछूहासकोरूपसनेहरुषाई॥ हीनम
लीनकुचीलकछूमदकेबसतैंबनीऔरैलुगाई॥
आईहोंदेषिगुपालजूआजुकरीदिठईविधितैं
बनिआई॥ लंगरजौंकुलटालषिजाहितौकेसैं
रहैवृषभानबडाई॥२३॥ यथालालजूकेसषाकी
करतूत॥ लंपटललवारतेरेसंगकेसषाषिलारवेई
षेलषेलैंजैसेमनमेंबसतहै॥ बीचिकीलुगाईजे
रसीलेनेरोहितुचाहेतिनिसोंबिगारिकैकुढंगनि
रचतिहै॥ काहूकीगुवारिकोषवाइकछूचालपा
स्योसोईहालजौंभुवंगमडसतिहै॥ दौरीदौरीफिरै

बोरी भई बूझै पोरी पोरी देषि देषि गांव के गंवार कै हंसत
है ॥२४॥ अथ बीररस को स्थाई भाव ॥ वर्णनं ॥ दोहरा
॥ अति उछाह मन की उमगि विनय मोह वल पाइ ह
षी दिक तें होत है बीर नाम रस भाइ ॥२५॥ यथा लडे
तीजू ॥ सौंह दिवाइ बनाइ कै दोष नितो षनि लाइ कै
मोहिनि घोरे ॥ आपु न जाइ गुवार नि मैं वनराइ उदार
ह्वै भेद उचारे ॥ डीठि लगाइ रहै उत वीर जो कान्हर की
छबि नैनन निहारे ॥ जानि रसीले तो हिनू जन ओरहि
दे वीचन नाउ निकारे ॥२६॥ अथ करुणारस को स्था
ई भाव ॥ वर्णनं ॥ दोहरा ॥ रुदन दीनता स्वास मुष देह
घात उरलाय ॥ बदन सोष सो जानियत करुणा रस को
ताप ॥२७॥ यथा लडेतीजू को वचन ॥ केतो समुझायो
यह जियरा रसीले माइ जानति हौं जे सो रसीलो अ
नमानो है ॥ चलिवो तिहारो सुनि संग चलिवे को नि
त उमह्यो रहति हियें फूलन समातो है ॥ तातें बलि
हारी यह बीनती हमारी सुनों संग ति तिहारी तैन
होइ छिन हातो है ॥ आपु नीम या तें और मेरी ये द
या तें या सों पाली ये रसीले लाल जैसो नेह नातो है
॥२८॥ अथ भयानक रस को स्थाई भाव वर्णनं ॥ दो
हरा ॥ उत्तम के अपराध तें के घर दोष प्रकास ॥ मन
विकार उपजत जहां भय संज्ञा कहि तास ॥२९॥ यथा
लडेतीजू को बचन ॥ दीरघ आउ रसीले रची प्रभु जो
५

सबजीवनिकोपितुमाता॥यांचलएसरफूलनिकेनि
तत्रासतकाममहाभयदाता॥आपुनीआपुनीपेज
निवाहतदोऊनहीअवलादुषज्ञाता॥कामततचाइ
सताइनिकासततप्राणनिराषतहेरिविधाता॥अथ
वीररसकोस्थायीभाववर्णनं॥दोहरा॥जहांनमन
धीरजततजेदेषिसकलविपरीति॥सवविधिचितसमु
झइवोधीरसुरसकीरीति॥३१॥यथालछ्रतीजकोः
चंद्रमातेंवचन॥आननहमारेकोबालपनोमीतुचंद
आपुहीसोंकीनोंजिनिआपनोकहाएतें॥ताकोनी
रसीलकेवियोगतेंविएनपरेछाडिहूमिताईभयोवे
रीतेंदुपाएतें॥एसीततुचितमूढकामकीकुसीषले
तआवतकहाहैहाथएतकुतचाएतें॥चाहततनिका
ईजोतोलेहजितीलीनीपरेसोगुनीवढाइलेहोंला
लुनकेआएतें॥३२॥अथवीभत्सरसकोस्थाई
भाववर्णनं॥दोहरा॥अतिकुचीलअनभावतोव
स्तुदरसव्योहार॥मनगिलानउपजनजहांरसवी
भत्सप्रहार॥३३॥अथमनुष्यदशायथा॥वोलत
दीनभयोनितडोलतडोलीकेओलेमहादुषपैहे॥
जुलिलारलिषीसुघटेनवढेजिनिदीनह्वैनाहक
होतघिघैहै॥अरेचेतविसंभरकीकरनीघटिमें
तजिवाहरकोभरमैहे॥दानतहेततवदृषदयो

अबदांनभएकहानाजनदैहै॥३४॥अथअद्भुतरस
कौस्थाईभाववर्णनं॥दोहरा॥इंद्रजालछलबलजहां
भूषनबसननिहार॥अचरजचितकौहोतजहांअद्भु
तरसच्यौहार॥यथादंपतिमिलाप॥प्रानप्यारीप्रान
प्यारोदोऊमिलेकुंजमधिरसकेरसीलेक्रैरिझाएले
तकामकौं॥जिनकेडरनकाहूपायोनकरनसुषआ
हटअचानकभयौरीउहिवामकौं॥अद्भुतसरूपव
न्यौंभाजिचलेदोऊजनहोफतिहरबरातलेनविराम
कौं॥विछुवाअनोटकीभूलीसुधिललनाकौंपीतपट
वांसुरीकीभूलीसुधिस्यामकौं॥३६॥अथरौद्ररसकौ
स्थाईभाववर्णनं॥दोहरा॥शस्त्रपातरिपुकौदरसके
भयकैअपमान॥उपजावतिहैक्रोधकौंसोईबीरबषा
न॥३७॥यथादंपतीकौसतरंजकौविलास॥इन्तउन
पातसाहबैठनबनतअबतातेंतावजीवलैसमीप
अभिलाषहै॥अबघरीदेषिआनिबाजियेपरति
आगेंमुहरादबाएलेतकहिकहाभाषिहै॥कैसो
यहषेलमनसूंवाकीनराषीसुधिआलीसतरंजे
मेंरसीलोरसराषिहै॥जैसोरूपतेंरोतेसोलालरु
षआगेंपर्योषेलिहैकहारीजोप्यादोऊनराषिहै
॥३८॥अथसांतरसकौस्थाईभावबर्णनं॥दोहरा
॥छाडिभावसंसारकेसबसोंहोइउदास॥जबवि

नत्लागेएकसोमनबहिसोनपरगास॥३९॥यथा॥जा
नतिहोंजितनकोंअपनेकुरतेनहिसंकटवारकेसा
थी॥मानुषरूपधरेंपसुहेसबऔगुनकेगुनकेम
तिनाथी॥मोहबेढाइकरेहगव्याकुलधूरिमिली
उपलीजनोपाथी॥बैरनिकेदलकेमलवेकहुका
मकेनाहकुह्मारकेहाथी॥३९॥दोहरा॥जोरस
कोंस्थाईभावहेत्योंहीभावविभाव॥केहेनहीयुक्त
कबैदेयातेंजेअनुभाव॥४०॥इतिश्रीमत्सारस्व
तकुलमंडियेवंशोद्भवनंदलालनस्यात्मजरसक
रायनस्युश्रीरसीलेमिश्रबिरचितेरससागरेन
वरसस्थायीभाववर्णनेनामद्वितीयस्तरंग॥२॥
अथविभावादिनिरूपणं॥दोहरा॥पांचभांतके
तेगनेंसबरसपोषकभाइ॥इकविभावस्थाईक
हूंअरुअनुभावगनाउ॥१॥सातुकव्यभिचारी
गनोंतिनकेभेदअनंत॥इनहीसोंजोपोषियेस्था
ईताहिकहंत॥२॥अथविभाववर्णनं॥मनकी
औरेरीतिजोहोइछाडिरसरीति॥नाउधरत्ति
तारीतिकोभावकहतकविमीत॥३॥अथभेदक
थनं॥तेविभावद्वैभांतिकेइकआलंबनजान॥
दूजोउद्दीपनकह्योतिनहूंकहूंप्रमान॥४॥आले
बनतरुनीतरुनउद्दीपनबहुभांति॥चंदनचंद्र

सुरभिसुषदसबसुषदाईकोंति॥५॥अथआलंब
नकोउदाहरन॥डीठिसोंहैदेतडीठिलावतऐनेसी
भांतिओठनिहीहरवराइवोलैआषरारसी॥मांग
निहीमागैकरहाहाविननाउकैहेजानिपैनआनु
वहीवावरीवयारसी॥काहूकेपठाएकाममोहन
केमंत्रपाऐंएहोईसिधाएपढिआएहैंवनारसी॥कै
सेंवहराइकेअंगूठातेंउतारिलईदेषोभटूऊलट
नदेतमोहआरसी॥६॥अथउद्दीपनकोउदाहर
न॥यथालडैतीजू॥जानिकछूअपराधिगुपाल
कोमांऊंसीवालरतोंहीभईहै॥आईरसीलेम
नावनजेतिनकीसिषएकनमानिलईहै॥ताही
समेंवनकोकिलधुनिआनिअचानककानगई
है॥मावसतेंछूटिचंदकलावृषभानसुतावहरी
तिलईहै॥अथअनुभाववर्णनं॥दोहरा॥जोउ
नकीकरतूतसबपतिहींदेतलषाइ॥तेअनुभाव
बषानियेहावभावबहुभाइ॥७॥अथस्थाईभाव
वर्णनं॥दोहरा॥दंपतिप्रीतिजुहोयहियस्थाई
सोईभाव॥जाकोंपोषैभावसबसोशृंगारसुभाउ
॥९॥रतिहांसीअरुशोककोधउछाहबनाउ॥
भयजुजुगुप्साविस्मईस्थाईभावगनाउ॥१०॥
नवरसमैप्रगटनसदाओरैहूसबठांव॥वारबा

रकेवरननेंप्रकरनग्रंथवढाउ॥२१॥सुगमअर्थयाये
तेसदाहीनेहेमोंप्रकास॥इनकोजोविस्तारहे
सोरसरतनप्रकास॥२२॥इतिश्रीमत्सारस्वतकु
मडियेवंशोद्भवतेदलालतस्यात्मजरसकराय
तत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरससागरेभाव
विभावअनुभावनिरूपणोनामतृतीयस्तरंग
॥३॥अथसात्विकभावनिरूप्यते॥दोहा॥स्वे
दस्तंभविवर्नपुनिरोमहर्षसुरभंग॥अश्रुपातए
पृथुप्रलयसातुकभावप्रसंग॥४॥एसबआठप्र
कारहैंसबरसमांहउदोत॥ज्ञेमांहनवमोइहोंका
हूकेमनहोत॥५॥अथस्वेदभाववर्णनं॥दोहरा॥
श्रमदुखजाभयहरषतेंउपजतसलिलसरीर॥
ताहीजलकोंस्वेदकहिवरननहेंकविधीर॥६॥
यथालडैतीजूका॥अरसोहैंहठीलेअतिरसके
रसीलेगातछविकीछवीलेमोहनीकेअवता
रहें॥उरजकपोलघनीबानकवनकवनीफल
कैप्रसेदकनीसोभासुषसारहे॥देषिदेषिचतु
राईसुरतिरंगअंगनिकीदीनोराजतोहीनिया
जद्यपिअपारहे॥पढिपढिआसिषमदनअभि
षेकह्यौमेरजानवेईवारविंदुनकेवारहे॥७॥अ
थस्तंभभाववर्णनं॥दोहरा॥षेदकामभयहरषतें

गत्तिनिरोधजेहोइ॥स्तंभनाम ता सों कहत कहत रसीलेलोइ॥५॥ यथा लडैतीजूको॥ रूपअनूप गरूरतें गवारि भमानतिहीं सिषई बहुतेरी॥ जाइ लगेजित हीतित हीं चितुलीनोचुराइ चितचितए री॥ दाइमे आइ गई पियके अवनेंन निरसीले करांछ निहेरी॥ कोमगमे उगदेइसषीजुपरीप गमें नूपुमेंन की बेरी॥६॥ अथ विवर्न सात्विक भाववर्णनं॥ दोहा॥ हर्ष सोक भय को पगद्दुषतें जो तन मोह॥ वरनपीत अतिहोत जो गनविवर्न कहितहि॥७॥ यथा लालजूको॥ जाकी समता कों मेरु कंचनतरसरह्यो कंपकरे चंपकवसंतव नवारीको॥ तरितानरफराय तो रितनुतेतु कीनो रोचनन रोचपाई रजनी विचारीको॥ प्यारीके बिरहपायें कामदेवके सतायें विधिको वनायो सुरसीलो अंग प्यारीको॥ चाहत मिताई कीनेंगनके परनयातें फुरतफरनपातचैतपतझारीको॥ ८॥ अथ रोमहर्ष सात्विकभाववर्णनं॥ दोहरा॥ क्रोध भीत आनंदतें कामदेव॥ आनंदकोपन सीतभय आलिंगन बहुपाय॥ रोम उठहि जो गात मेंरोमहर्ष सो भाइ॥९॥ यथा लडैतीजूको॥ काज
८ रंगतरंगधरेंवन वोलरसीलेसुनेसुरवाके॥

श्रीवृषभानकुमारितबैउमहीतटदेखि कोंरबि
जाके॥ स्यामबिलोककदंवकुंजमेरोमउठेतन
मेंललनाके॥ जानिसमीपउलाइतेमेनमनोस
२मारेप्रसूनसोताके॥२७॥ अथसुरभेदसात्वि
कभाववर्णनं॥ दोहरा॥ क्रोधभीतआनंदतें
कामदेवकपीर॥ उपजावतसुरभेदएजानतिहैं
मतिधीर॥२१॥ यथालालजूकीरतिबर्णनं॥
दीनह्वैपाइनिकोंपरसेंमनराइहंसैंअपराध
छमेको॥ पानिधरैकुचमंडलपैसकुचेहगआ
ननतारिनमेकों॥ लेनतहोरदनछदकोंरसने
हरसीलेसरीरलसेको॥ कोटिसुधारसमंगष
रैसुरभंगपियारतिरंगसमेकों॥२२॥ अथअ
श्रुपातनामसात्विकभावबर्णनं॥ दोहरा॥ सोक
हरषभयधूमतेंअनमिषदेषनसीत॥ नयन
होयअतिदेतजहेंअश्रुपातसोमीत॥२३॥
यथालडैतीजू॥ जानिरसीलेहियेतुमकेसेंके
ऐसेकठोरनभाषोललाजू॥ मेरीसहायकियें
जियराषतजानोंकहाइनछेदकलाजू॥ वाके
तोनीरअमोघवहेजबलोंछतियांभरिमेटत
नाजू॥ दीजैबडोरसदाननहीवैघरिजाइगी
लाडिलीचंदकलाजू॥२४॥ अथकंपनामसा

त्विकभाववर्णनं॥ दोहा॥ आलिंगनभयसी
तसुषकोपरोगकीपीर॥ जबहीउपजतहैत
बैउपजतकंपसरीर॥२५॥ यथालालजूको॥
तेरेमुषससिरमरीचिकीमरीचिसीचिजोंकमु
सिक्यानितेंअधिकसियराएहें॥ देषिअली
जैसेंपीनपीनकीरुकोरनिसोंपियकेरसी
लेअंगकंपतजुडाएहें॥ मैनतेजकोनिवास
आपुनेंहियेमेंराषीकाहेसकुचितबिषिटूटे
बनिआएहें॥ सुषदकुमदअभिलाषनिसो
सीरेसुषरसकेसरोवरमेंलालनअन्हाएहें॥
२६॥ अथप्रलयनामासात्विकभाववर्णनं॥ दो
हरा॥ जहांसरीरकरनूनको होइसकलअव
रोध॥ मनकितहूबसिरहैजहांवहेप्रलयकोबोध॥२७॥ अथप्रलडेतीजू॥ जवतेंदृगनेहवढो
तियकेतबतेंनरसेचित्तदेषनेकों॥ वहदाइव
नैनकवैंहूकबहूंलषियेजुसषीमनमोहनकों॥
मनोमेंनकेत्रासतेंसावरेगातकीकांतिमेंला
गतिपोषनकों॥ विधिजोगतेंभेंटरसीलेभई
तबछाडिदयोमनवानिनकों॥ अथजंभानाम
सात्विकभाववर्णनं॥ दोहरा॥ आरसभयश्र
९ मकामतेंजहांजंभाईहोत॥ सात्विकभावनिमें

गनतजेभा सुमतिउदोत॥२९॥ यथालाउलीके
॥वैदीगुवारिलुगाइनिमाहियुसाइनिके रति
सीठकुरानी॥जेकछुओरचलीचरचानिमैं
प्रतिजुतरदैवतरानी॥रावरोनामरसीलोसुनैं
ललनोचुपकैदृगमोरलजानी॥दीनीजेंभांतिज
बैचुटकीषुटकीगनिवाततिहोतषिस्यानी॥
॥२०॥इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भवनं
दलालतस्यात्मजरसिकरायतत्पुत्रश्रीरसी
लेमिश्रविरचितेरससागरेसात्विकभावनिरू
पणोनामचतुर्थस्तरंगः॥ ॥अथविभिचारी
भावनिरूप्यंते॥दोहरा॥अबविभिचारीभावस
बकहूंसुनाउसुजान॥जेसबहीरसमेंसदाप्रग
टहोतहैंग्यान॥तेनिरवेदगिलानमदअनसू
याश्रमसंक॥आलसचिंतामोहधृतस्मृतिल
ज्जापुनिग्यंक॥हरषचपलतादीनताजडताग
र्वविषाद॥उत्सुकताआवेगपुनिअवहित्थाउ
न्माद॥३॥निद्रासुप्नविवोधमतित्रासव्याधिअ
मर्ष॥अपस्मारगतिउग्रतात्रुरुवितर्कसुष
मर्ष॥४॥एसबग्रंथनिमेंकहेगनेतीनिअरुतो
स॥औरेंग्यानितहोतहैंयोभाषतिकविईस
॥५॥जुदेजुदेपुनिरसनिमेजोविभिचारीभाव॥

तेवहुज्जाइतनकेंकहेंतिनहूदेंउमनाइ॥६॥अथ
निर्वेदविभिचारीभाववर्णनं॥दोहरा॥सोनिरवेद
कहावई जोअपनोअपमान॥आपदनत्वजु
ज्ञानतेंअरुहयर्पतिजान॥तामेंलक्षणहोतहेंअ
पनोषेदप्रकास॥ओसूडारनतननपत्तमिथ्या
जगतप्रकास॥यथालडैतीजको॥तबतोपलए
करद्योनभयोनिसिवासरमोहनसंगरचो॥ति
नकेविछुरेंननतिंनसरयोवेकहाकहियेनहिने
कुलजो॥अजहूंबिरहानलदाहरहेअकुलाइ
सरीरनिछाडिभजो॥जियरायहजाननतिहोजम
राजनिलाजनिजानिकेतोहितजो॥१९॥अथ
ग्लानिवर्णनं॥दोहा॥सुरतिषेदमनमापतेंव्या
पेक्षुधापिपास॥इत्यादिककारजभएअंगगि
लानप्रकास॥२०॥तनदुवलाहटकंपपुनिमन
उछाहकीहानि॥आरसकहूनकरसकतनी
कोंकहतगिलान॥२१॥यथालडैतीजू॥मूषनछू
टिपरेकितहूबिथुरीअलकैंकरसोंनउसारे॥
चाहनरूपरसीलोलष्योनतउहाकोरनिमो
रिनिहारे॥आंचरुऔचिनगातसुधारतकेंठमि
लानकोवाहतिडारे॥चोरतलालनकेचितकों
१० अनपाइहरेंजवआहिउचारें॥२२॥अथमदको

व्यभिचारीभाववर्णनं॥दोहरा॥होनजहांमदपान
तेंअतिआनंदसोंबैन॥सोकहियतमदपाननन
हैंउत्तमकोसुषचैन॥१३॥मध्यमगावतहैंसतपु
निजोनरअधमसुहाइ॥सोकुटुभाषतरोवई॥
सेविहनलषाइ॥१४॥यथालटतीजको॥मैय
हभाइनजानतिहौकिरसीलोसनेहछकोहि
यधारें॥लैगईसाथगुवारनिमेंविधिजोगतें
काकुपियारोनिहारे॥मदसोंचढिमृदभईलल
नाकुलकानत्रियाकहुकोनविचारे॥कौनकौ
गातहियाकहिकौनकौनकोआंचरुकौनसे
भारे॥१५॥अथअसूयाकोव्यभिचारी॥दोह
रा॥जहांऔरकेगुननिकोंसहनसकैउतकर्ष॥
दुर्जननातेंकोपतेंयहैअसूयाकर्ष॥१६॥यामें
लक्षणहोतहैंकोपऔरकेदोष॥कहियतहैदु
षपाइजहांउपजतहेसुषसोष॥१७॥यथालटे
तीज॥काहूरसीलेसुभाइरचीवहआपुनेहा
थनिसोतिकराला॥सुंदररूपअनूपमनोरति
मैनमनोरथभाइकीसाला॥डीठिमैंपैठिकियो
जुकछूनपियेहूकैरेसुहलाहलहाला॥लाल
गरेंपरीबालहियेंमेंभईनटसालगुलालकी
माला॥१८॥अथश्रमवर्णनं॥दोहरा॥मारग

निद्राषेदरति इन तें देह अयास ॥ सो कहियत
श्रम होत तहें स्वेद गिलान प्रकास ॥ १९ ॥ यथा
लैडनीज ॥ पहिलें अति गूढर सी लोसने ह महा
निधि मानि दुराध ॥ सो जिय सोधि रही बहु भांति
सषी कबहून कहूं जान्यौ न परयौ ॥ कहूं लाल
न कुंजमें केलि करी रति को श्रम स्वेद सरीर सरयौ
॥ कहिधौं अब कैौं दुरिहै सजनी वलसौं न लके
जल ज्यौं उछरयौ ॥ २० ॥ अथ शंका को स्थायी व
र्णनं ॥ दोहरा ॥ अति अनिष्ट संभावना इष्ट हा
नि सु विचार ॥ सो संका पर दुष्टता निज कुनीत वि
स्तार ॥ २१ ॥ हियें धकधकी नाथ तनु मुष में दीर
घ स्वास ॥ चहूं ओर चितवति चकनि लहा ण
इते प्रकास ॥ २२ ॥ यथा लैडनीज ॥ को बचन ॥
जानी नहीं कबहूं कित हूं अवलोंतु मसों पहि
चानि तई है ॥ आजु लों नो निरवाही भलें बन
आइ के नाह के आगि तई है ॥ साहस मारी नि
आषे तकैं न नदी सुनि गोड़ी उसासमई है ॥
ऊहे कहा उतपात निजानियें सो पिन आंषिनि
देषि गई है ॥ २३ ॥ अथ चिंता को व्यभिचारी भाव
वर्णनं ॥ दोहरा ॥ विनु पायें अपनो हितू चित को
लागत ध्यान ॥ स्वास ताप सरनो जगत चिंता ताहि

२२

वषानि॥ २४॥ यथा लालजकौ॥ जो तुम वातिय केह्रग चाहो तो कैसे कै आपनो रूप लषैहो॥ मूरति वातिय की हियमें वसी वाही के ताप न तापतवैहो॥ ओसें तो ओरक छूनसुहाय ललाललना वसैक्है कहु क्यों सुषपैहो॥ जानति हों हरियागतितें दिन द्वैक में प्रानप्यारी लैजैहो॥ २५॥ अथ मोहको व्यभिचारी भाव वर्णनं॥ दोहरा॥ भीतकाम दुषसोकतें जहां होत चितमूढ॥ फुरैन कछू सरीरगति मोह कहत कबिमूढ॥ २६॥ यथा लडैतीजू॥ लागनि षगनि नई रूपकी पगनभई आगनद वनिदई चितमें चटपटी॥ गोवको सुभाव माई नाहकच वाउ करै कालीसी करालीसास नंदसो षटपटी॥ प्रीति वनमालीजू सें कैसें प्रतिपालीजाइ आलीहूं की घाली दई संक की सटपटी॥ सोंकों जाहि टोकों को लों अंतर हिरो कों आनि वनी जियमो कों सब भांतिनि अटपटी॥ २७॥ अथ धृति को व्यभिचारी वर्णनं॥ दोहरा॥ विद्या ग्यान बिवेकतें पायें अपनो इष्ट॥ उपजत है संतोष जहं धृति भाषत जहां स्पष्ट॥ आनद ग्यो रैमें जहां श्रमको त्याग सुहास॥

इतिमाहोतविवेकतें इछाभिटजहुलास॥२९॥
यथा लालजूकौ॥ एकनिसोंरसरीतिरचैसषी
एकनिकंठभुजानिपसारे॥ एकनिसोंरतिके
लिकरैरिसतेंरसएकनिपाइनिपारे॥ वानट
नागरतेंसजनीइहिभांतिसबैवनितारुचिधा
रे॥ पूरनतेमेरेरसीलेमनोरथजदलोचनकोरि
मे[illegible]रिनिहारे॥३०॥ अथस्मृतिकोव्यभिचारी
वर्णनं॥ दोहरा॥ चिंतानेकेगुणननतें सुमरनहो
तप्रकास॥ पहिलेंजानीबातकोंस्मृतिकोयेह
विलास॥३१॥ यथा लालजूको॥ नैननिआगे
लसैदसनावलीजोमणिदाडिमकुंदलषाऊं॥
होतआगोहेंसरोजससीफलकेमुषकीरुचि
आनितहोंऊं॥ चंपककेसरकंचनआहिरसी
घ्रा लेहियेंतनकीसुधिपाऊं॥ मैंतोविसारीभलें॰
उहिप्यारीकोंजोइनितेंजुविसारनपाऊं॥३२॥
अथलज्जाकोव्यभिचारीवर्णनं॥ दोहरो॥ ही
नकर्मकीनेजहोगुरुजनदेषिलजात॥ अप
राधगनिआपकोंलज्जाकहियतिजाति॥३३
॥ यथा लडैतीजू॥ ठाढीहुतीअपनेंरसमेंतिय
वारछुटेंअँगियाविनुछाती॥ आलीकेंअंस
धरेंभुजभाइसोंपाननिषातहेंसैवनराती॥ आ
१२ इगएतहांलालरसीलेविलोकितियामुसिका

दुलजाती॥ वैठिगई मुरिगात संकोच दुकूलसों
हाथे न वो षिस्याती॥ ३४॥ हर्षको व्यभिचारी॥ दो
हरा॥ अपनी प्यारी बस्तु कों पाए जहां अनंद॥ रो
म हरष सुर भंग तहां स्वेद चलत तहां मंद॥ ३५॥ य
था॥ लडैतीजू को॥ अपने रस केलि समें नंद रसी
ले समी पपि यारी लषी॥ पिय आनन चाहत
प्रेमकलाकुल सी मनषी॥ रतिनाथ सनाथ प्रमो
द स्वेद तन रोमन की अवली हरषी॥ रसराज अ
रामकी कंचन भूमि में छोटे सरू विरवा से सषी
॥ ३६॥ अथ चपलता को व्यवहारी भाव॥ दोह
रा॥ द्वेष राग व्यापे जहां क्रियानुरत अनि होत॥
अधिक बचन मुष परुष ई चपला हट उद्योत॥
यथा लडैतीजू॥ सषीके वचन॥ नीठि नीठि पूर
नवसी है हूंतें साथ्यो जाइ तें हू सुन्यो हंस दूत द
मयंती नल को॥ याह न पहार को सराहि वौ सने
ह भार बल को न काम जहां काम छल बल को॥
डांवाडोल डोले काहू भाइ मैन चैन गहे वावरी
तें कीनो मन यान चलदल को॥ तेरी तौ लगन
लागी प्यारे नंदलाल जू सों जापै ललचात चि
त सुंदरी सकल को॥ ३७॥ अथ दीनता व्यभिचा
री भाव वर्णनं॥ व्यापै जहां दारिद्रता जहां वाढत

दुषच्याइ॥ अतिमलीनसंतापतनवहदीनतासु
भाइ॥ ३९॥ यथा लडेतीजू॥ वारनसनेहविनुपरम
रुषाईगहीभूषनवसननित दूषनकेगनमें॥ व
दनमलीनहीनदीनंक्केरहतषानपोनपानग्या
नपहिचाननतजीमनमें॥ नेनआंसूतापहियें
हीनताबिलापमतिनितप्रतिशानरहेपाहुनेके
पनमें॥ सबनिरसीलेभाइअवलानिरादरी
होमैनपापीआदरुदेफूल्योफिरेननमें॥ ४०॥
अथजड़ताकोस्थाईभाववर्णनं॥ दोहरा॥ फुरे
नजहांविवेकमतिमिटतदेहकेभूप॥ जड़ताव
हीकहावईचित्ररूपसमरूप॥ ४१॥ अथलडे
तीजूवचनसषीको॥ वृजमेंवसतिकाहूंआसु
लोनजानीनीकेंजाकेदेषिवेकोरतिकामअ
भिलाषीहै॥ जानियेनकोनविधिजोगतेविप
नगईकेसंहनमंदिरकीपोरिजिनिनाषीहै॥
सोईवहगवालिनीरसीलोरूपचाहिनेकुह्वैगई
बषानसीलुगाईसबसाषीहै॥ ४२॥ अथगर्व
कोव्यभिचारीभाववर्णनं॥ दोहा॥ वलकुलसं
पतिरूपमदगुननतेजोअभिमान॥ काहूगनन
नआपसमताहिगर्वकरिजान॥ ४३॥ अथल
२३ डेतीजू॥ औरेवेलुगाईजेबिकाईवाकोरूपदे

षिचाष्यो है रसीलो रस वाके हाइ भाइ को ॥ जा
कौ पटतर कौ नं काम कौ तिनूं कागनें होइ अ
नमान हीनें जानो ग्वाल गाइ को ॥ ऐसो न
वषान कर छाती न पूषान धरै ऐसो नो वरषा
न सषी मूल है चवाइ को ॥ गोकुल न जाने हम
को न गांनुं को ठन ठौउ को न नंदराइ को नं पूत
नंदराइ को ॥ ४४ ॥ उत्तम पुरुषनि केन होवि
ता वाह सहाइ ॥ मध्यम नर चित अनमने अ
धम सो घकु सुभाइ ॥ ४५ ॥ अथ लडेतीजू ॥
को पद ई जु दई मति हीनमें दीन दसा यह
का हि सुनाऊं ॥ और वसाइ नहीं दुष पाइ षि
स्याइ षिस्याइ के नैन बहाऊं ॥ मारनमार
सुमार की चोटनि को लगि ओटनि जीव व
चाऊं ॥ कान्ह रसीलो लष्यो जिहि वार विचा
र रही वह वार न पाऊं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अथ उत्सु
कता को व्यभिचारी भाव वर्ननं ॥ दोहरा ॥ बिन
पायें अपनें पियहिं जहे धीर जछुटि जाइ ॥ स
मै होजु गरसम पलकु उत्सुकता हि बताइ ॥ ४८ ॥
यथा लडेतीजू ॥ लाडिली राजकुमार महा
सुकुमार वियोग को कैयो दुष छै है ॥ जानति हो
नम हूं उनकी गति बातकै है ऐसें आंसू चले

है॥लालरसीलेचलोउठिबेगिबलाइलोंद्योस
विभावलुद्दहै॥सोऊपरेतियकोहियराषरिया
लसोद्धिहै॥४९॥अथआवेगकोव्यभिचारी
भाववर्णनं॥दोहरा॥इष्टअनिष्टविलोकसुनि
आनिभांतिनृतसान॥राजभीतबरषादितेध
कपककरिहहरात॥५०॥हरबराइतनमनजु
होछुटिजाइअवसान॥बिकलदेहकरनृतस
बर्णोआवेगबषान॥५१॥यथालडैतीज॥
लालरसीलेवियोगतेंबालकहूँदुरिभौनके
कोंनपरीहै॥आंषिलगीपलएकनहोंविधि
जोतिगवासेनिमेषुसरीहै॥गातलगेमहरा
इउठीतजिसेजुविछौननिदेषिडरीहै॥और
फुरेनकछूहहरेतहआंगिहीआगिपुकार
करीहै॥अथअवहिव्यभिचारीभाववर्णनं॥
दोहा॥जहोचिहनमुषवोलिवोराषतसवेदु
राइ॥औरेकरकरनृतसोयहअवहिथाभा
इ॥५३॥कपटढिठाईगर्वतेंहोतसदावहित्था
इ॥बोलनबचनविलोकवाऔरप्रसंगचला
इ॥५४॥यथालडैतीसों॥सषीकोबचन॥
तोसीअनेकवसेनषमाहरी॥तूंमतिजानि
यैंऔरसिरीषी॥जोकछूकाहूसोंनाहिनो

कुंजगलीदुषकौंनसोंभीषी॥मेटिसबैगुनमेरेरससी
लेमईअबनंतरवालौंत्तीषी॥मोहनचाइकछूस
तराइभलीभईषिवनतरानतोसीषी॥५५॥अथउ
न्मादकोस्थाईभाव॥वर्णनं॥दोहरा॥कामसोक
भयहरषतेंचितकोंजहांविकार॥सोउन्मादक
हावईजहांनकछूविचार॥गीतहसीरोदनलप
नकथाप्रसेगसुभाइ॥औरऔरभांतिकेउपज
तेंहतहांआइ॥५७॥यथालडेतीजू॥चंदनक
पूरालकोसोपूररालकोसोपूरहीनसीरीसीरी
बलीबडवानलतेंजेठीहै॥कमलसमूहतेंदुकू
लनसुह्यततनवेहरहूमारिकेगरूरनिअमेठी
है॥आसुनिउसारेहेसिचोकेफरिलोचननि
दीनछकेचंदनचाहेऐसीहोतमीचजनुवैठीहै
लालनुरसीलेकेरसधारेइहिचांदिनीमेजानि
यैनकोनसीवजागिआनिपैठीहै॥५०॥अथसुह
नकोस्थाईभाववर्णनं॥दोहरा॥श्रमगिलानचिंताम
देहिपाइजहांचितहोत॥इंद्रियकेसुषछाडिकरिमु
दितहांउदोत॥५१॥यथालालजूको॥घूमवेठाइके
रूपनिवारतमुदितकेमानोचाहविडारी॥वेनवि
गारिहनीवतिरानिहूआरसुकेतिनभेटनिवारी
॥वातियकीयहचेटीसीनीदवसीतुममेननिहैं

प्रतिहारी॥ लाल निहारे रसीले हियें मधि कै सें प्रवेस
लैहवहनारी॥ ६०॥ अथ स्वप्न को स्थाई भाव वर्णनं॥
दोहरा॥ जहां नींद वस कै भयें देषे सुपन अनेक॥ भय
आवेग ग्लानि सुष हर्ष कोप सुविवेक॥ यथा लडै
तीजू॥ गावत गीत रसीले विवाह के कामिनी अधिक
रातिलों जागी॥ आरसतें उचटी सब हैं तन बेपोदिरही
मिलि कै अनुरागी॥ सोवति में वृषभान कुमारि कही
बतियां हर के रस पागी॥ प्रीति नई प्रगटी हियकी हैं
कान सुनें सब आनन लागी॥ ६२॥ अथ विबोध के
व्यभिचारी भाव बर्णनं॥ दोहरा॥ निद्रा के छूटें जहां है
त चेतनता आइ॥ अंगराहट जंभान यन बोलन ज
गत सुभाइ॥ ६३॥ यथा लडैतीजू॥ सोवति ही परजं
क परी ललना रति रंग निते अरसाई॥ तैसें ही आ
रस भीजे रसीले गुपाल लषी छबि चूमि जगाई॥ छू
टि रही अलकें मुष पै तहां जोरि भुजा अंगराति सु
हाई॥ घेरि रही घन मंडली चंदहिं मानहु दामिनी बा
रि बनाई॥ ६४॥ अथ स्मृति को स्थायी भाव वर्णनं
॥ दोहरा॥ निहचै होइ जहां हियें करि बिबेक ठहराइ
॥ धृति संतोष प्रमान गति स्मृति जहां कहियत भा
इ॥ ६५॥ यथा लडैतीजू॥ मेरी कुल पूजन तुही मानी ठकु
१५ रानी करि तो ही नित आषिन में हिय में धरति हों॥ ने

रेईरसीलेउपदेशमहासुषनिधिजानिजानिआलि
निकीसीषनिदरतिहो॥आनिबन्योजोगअबमेरे
बडभागिनिसोंपेमकेपरेषेउरडीठहैअरतिहों॥दे
षनदैनीकेव्रजराजकोमुषारविंदहाहालाजआज
तेरेपांइनिपरतिहों॥६६॥अथत्रासकौस्याईभाव
बर्णनं॥दोहरा॥घनबीजुरीलसकतिनपतिअति
डरकारीरूप॥देषनओचकहोततहोंत्रासकंपकौ
भूप॥६७॥यथालैडेतीजू॥मानवतीमनरोसगहेंज
बबैठिरहीहठिसोंकरिमोनें॥स्यामतिहारेसरूपस
षाइनछेरिलईघनरूपसलोनें॥कोंधतिहीचकचौं
धतिआषिनिगातसलोनेहियोहठिमोनें॥दामिनी
दौरिदुरीघनमेंवहकांपतिभौनकेकौनें॥६८॥अथ
व्याधिकौस्यायीभाव॥वर्णनं॥ज्वरसंतापविवर्ने
तादुवलाहटदुषचित्त॥दिनदिनरूपसरूपछवि
व्याधिकहतकविमित्त॥६९॥यथालालजूकी॥
बाधतबाधअगाधभएननदाधतभानुजोंजोतिदि
याकी॥होतसमाधनआधधरीसुधिवाधकरैब
दिआधिहियाकी॥गाधिकेपूतलोंमनआराधिउ
पाधिरचीमानोऔधिजियाकी॥हाधिकहाधिकसा
धिलगीवहसाधनसाधतव्याधिपियाकी॥७०॥
अथअामर्षकौव्यभिचारीभाववर्णनं॥दोहरा॥ज

हांनिंदा अपमानतें हीनहियें रसहमनि ॥ ताहि कहत आमर्ष सो कंप अरुनहग जानि ॥ ७२ ॥ यथा लछेनी जू ॥ आजु की रैनि कोने रोकि यो रुतमूढमयंक न हों बिसरोंगी ॥ देषि घरी कि में छाडि सरीर अधीरहै ता ही में आनि बसोंगी ॥ जो मरिहै न दई गति तें होत चाइत चाइ के आगि करोंगी ॥ तेरो रसीलो सुधारस पान के मारि हों तोहि के आप मरोंगी ॥ ७२ ॥ अथ अपस्मार को व्यभिचारी भाव बर्णनं ॥ दोहरा ॥ अशुचि पाप अरु हरोगनें केन नलगे पिसाच ॥ अपस्मार गुरुदोष नें कंप फेन मुष नाच ॥ ७३ ॥ यथा लछेनी जू को ॥ चंद्रमा तें बचन ॥ निकसे रतन जे रसीले छीरसागर तें देवनि अदेवनि बाटि लिये नास में ॥ चंद्रमा कलानि करराष्यो है लिलाट लाइ पायी यह कोन दषु देत जो बिलास में ॥ कालकूट हू तें कोई दारुण दुसह तेज चक नासो सुबल को ऊ ज्वल अकास में ॥ हरत हियो हर कैसे न काहू पे रह्यो परयो री न्यारो धरि राष्यो या तें चंद्र के अकास में ॥ ७४ ॥ अथ मरण को व्यभिचारी भाव बर्णनं ॥ दोहरा ॥ ए सब बरने भाव सब पाइया इ पर संग ॥ मरन न बरन्यो जाइन हि करत महा रस भंग ॥ ७५ ॥ सो शृंगार विरुद्ध अ

२६

निबरनतहीरसहानि॥ तातेंकह्यौनमेंइहांलोक
रीतितेंजानि॥७६॥ यथालैडेतीजू॥ मेरीतोसहल
हैमहूरततोभलोलीजेजीवजोगयाहीसमैंपोष
तमहामनें॥ तारापतितारावलआपुनेप्रकासब
सकामसिद्धिदायकअनेकजोगगनमैं॥ मारग
कोअवरोधीकोईहीनजान्योंजीनुमंगलप्रमा
यीहैनमैंगतिबाधनैं॥ एहीघरीएहीवारचलिये ८
रसीलेलालआरजनदेसमानकारजकियेव
नैं॥७७॥ अथअनयताकोस्थाईभाववरननं॥ दोह
रा॥ कोपदंडअपराधतेंजोहियनिर्दयभाव॥ ता
हिकहतहैंउग्रतातर्जनमारनदाव॥७८॥ यथालैडे
तीजूकीअवस्था॥ मतिमहतारीजिनमारीमन
तातहितकेंहूंलहतजाकोपोरुषविरामको॥ ला
जकेविचारबाहुजातमूलतेंउषारेहूंढेहूंनपाये
जेपठाएजमधामको॥ छीरजसहसबाहुकीनो
हैविवाहजाकोदारुनकुठारमोहगाटोजीनको
मको॥ रामरूपरावरोविलोपहैजूताकीगतिपेज
कोंपरसरामकामभयोबामको॥७९॥ अथवितर्क
कोविभिचारीभाववर्ननं॥ दोहरा॥ जहांसंदेहपैरक
हूसाधकबाधकभाव॥ तातेंहोनवितर्कतहांमोंहूअं
गुरीहाव॥ अथलैडेतीजूकोनिद्रा॥ गातवे.नो के

तेजजरीकिअनंगकेवाननिवेधहिराई॥आंसुनि
कीसरितापरिपूरिमेबूडिगईकिहरीविरहाई॥
जामिनीदेषिडरीहीकिमरीकितमोगुनतेंतमही
मैंसमाई॥प्यारेरसीलेकेसंगगईदईहगनीदकि
सोधिनपाई॥ ॥इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडियेवंशो
द्भवनंदलालतस्यात्मजरसकरायनत्पुत्ररसी
लेमिश्रविरचित्तेरससागरेविभिचारीभाववर्ण
नोनामपंचमस्तरंगः॥५॥अथहावनिरूपणं॥
दोहरा॥दंपतिकेश्रृंगाररसुषवसतेजेअनुभाव॥
पोषकरसआनंदकेतेकहियतहेंहाव॥लीला
हेलाललितपुनिमदविब्बोकविलास॥किलकिं
चितविभ्रमविहृतअरुकुट्टमितिप्रकास॥मोहाइ
तविछित्तगनिवोधकमुगधसुभाउ॥कविमारग
मरजादमेंएकहियतहैंहाव॥अथलीलाहावब
र्णनं॥प्यारीपीयकोरूपकेप्रियप्यारीकोरूप॥ज
हांबनतहेसांगसोलीलायहेअनूप॥४॥प्रेमभा
वपरहासकोकीनोचाहतचित्त॥नवहींयाहीभा
वकोरचिदिषरावतमित्त॥५॥लडेतीजथ्यथा॥
अंगकीनिकाईमृगमदसोंवनाईवहेवेईहाइ
भाइजेलुभाइचितलेतहें॥मोरकोमुकटगुंजमा
ल्यपीतपटकुंडलललितकटिकाछिनीसमेत

हैं॥ ऐंनमेंनप्यारीनटनागररसीलागतिहोउर
जउदारदोऊलीलाकहेंदेतहै॥

यथालडेतीजू॥ की॥
लीलाहावबर्णनं॥ कवित्त॥ नीलनिचोलहिंचै
ठतिमीलषिप्यारेरीतेरोसरूपबनायो॥ वेतो
गईकितहूंउतहूंफिरियोंकहिकेंअपराधजनायो॥ मेंहूंढमानकोमंत्रदियोनऊमनमें
अतिनेहलुभायो॥ आपुनहूंप्रगटेहेंसिके
किहिभांतिरसीलेमोहिंषिस्यायो॥ ७॥ अथ
हेलाहावबर्णनं॥ दोहरा॥ जहांरागश्रृंगारगुन
रसकीबातउपाजं॥ कीजेमनकोभावतोहेला
कहुकविराज॥ ८॥ यथालडेतीजू॥ अलवेली
सीआइगईपहलेंहरिकेकरतेंगहिलीमुर
ली॥ मुरिभाइरसीलेसोंओठनिलाइनचाइ
केंअंगुरीभांतिभली॥ बनमालउतारिहियेंप
हरीगहिहाथनिकुंजकीओरचली॥ इहिभांति
अलीवृषभानललीरतिमेंछलिहेलाकीरीति
भली॥ ९॥ अथललितबर्णनं॥ दोहरा॥ वुधिबे
लअंगसुभाउरचिजहांवदावतिभाइ॥ ललित
भावतासोंकहतसुमतिरसीलेराइ॥ १०॥ यथा
लालजू॥ नवनीरजनीलललसेसुषमापहुंचीं

महाबनमालहियैं॥गिरिधातुअनेकबिचित्ररसी
लेसषावलीपत्रकिरीटकियैं॥मुरलीमुषमोरि
बजावतिहैंजबतानतरंगअनंगलियैं॥सषीसं
ऊसमैंसंगगाइनिकेहंसिमुषदेषिमहासुषहो
नहियैं॥११॥अथललितलडैतीजूको॥कोम
लचरनकंजनूपुरजराइजरेउज्जलबसनअं
गजोतिझलकतिहै॥उरजउदारमुक्ताहलको
हारऔरचौकीकीचिलकमोहनीसीललक
तिहै॥नीकेकानभूषनकपोलनिमैंझांईपरै
मंदमुसिक्यानिदेषिजोन्हसलकतिहै॥देषिये
रसीलेलालराधिकाकुवरिमानोंरूपभारउफ
नाइछलकतिहै॥१२॥अथमदवर्णनं॥दोह
रा॥जोवनरूपसुहागबसजहांगर्वबढिजाइ
॥प्रेमनेमविनुगनितहांमदउपजतहैआइ॥
॥१३॥यथालडैतीजूको॥पाइनिमहावरुजिनि
दियोहैनीकेंरचिरूपकोतिलकलैतिलककी
योभालको॥ललितकपोलकुचमंडलमकर
कचितनरुचिदेषैंचितमोहैसुरबालको॥चा
रुचितचोपचाइचातुरीसोंगुहिकीनीआपु
नेकरनिसुबनायोदेषिमालको॥लागेसंगडो
लैनेईयाननघवाइवेकोराषियेछलीजूरसी

लोचिन्तलालको॥१४॥ यथालडलीजूको॥ जैसे रूप जोबननिकाईको प्रभाव वलि कीनो विधि रावरो न वैसो काहू वाम को॥ तेरे पग पूजि के सुमनिके बनाइ हेत चाहत चितो नर सनेंन सुधाधाम को॥ डारि के कमान वानहाथ जोरि बैठि रह्यो अनहीं वसा तें पैडो देषन बिराम को॥ जीतिवो तिलोकी को जसु हानितें कलम लान नेरी सुसिक्यानहीमें काम होत काम को॥ १५॥ अथ विब्बोक वर्णनं॥ दोहरा॥ प्रेम गर्व अपराधतें जहां निरादर मान॥ नरजन ताडनहित्नू को सो विब्बोक वषान॥१६॥ यथा लालजूको॥ फूलनिकी माल छोरि बांधिये महागुन सों बरुनी कटीली दृगि चोटनि सों मारिये॥ याको मन चंचल उरोजअति तुंग गिरि सिषिरि चढाइ राष्यो कोंहू न उतारिये॥ जों जों घनरस को न षातें अति चाहे त्यों त्यों मनमथ के हाथ चरित वस पारिये॥ जानिके रसीले ही ये जैसो बडो अपराध तैसो ई छबीली पिय दंड न विचारिये॥ १७॥ यथा लडैतीजूको विब्बोक हाव॥ कवित्त॥ जानें वलाइ वलाइ वलाइ कहा कीलिलार मैं लाल महावरु लीयो॥ लाल हि लाल के धोषे लष्यो प्रतिविंब है के नैन निमैं

लगिं आयो॥ बादतजातवहे अजहूं रंगदा वक
पावकसों दग छायो॥ जाहुनकेंहूं मिटावहुया हि
मलोई रसीलो सनेह जनायो॥ १८॥ अथविलास
वर्णनं॥ दोहरा॥ गमननयनभृकुटीवहुन तनके
विविधि विकास॥ जहांहोतपियपीतितेताकों क
हतविलास॥ १९॥ यथालडैतीजू॥ कौ॥ ऐनमें न नी
रहीनमीनह्वै न रफराजषंजनचकोरमृगपंक ज
सेहोतहें॥ बरुनीह थ्यार घनवारिमें चपलसंग ना
चनअपंगरंगहोतओन ऐनहे॥ प्यारीके बदन
रंगभूमिमें प्रतच्छलसेह्वै अलहासबहीके हीयेमें
उदोतहै॥ लालनुरसीलेकेरिझाइबेको षेलेंषे
लनेनेतेरेमहाइंद्रजालीकेसेगोतहें॥ २०॥ अथ
किलकिंचितहाववर्णनं॥ दोहरा॥ हरषगरवअ
भिलाषडर षेदकोपमुसिक्यानि॥ जहोतपजतु
एकैसमें किलकिंचितसोईजान॥ २१॥ यथाल
डैतीजू॥ बैठीहुतीललनाललनानिमें ष्यालहि
ष्यालके नेंननि चोहैं॥ लालरसीलेसेचानक
आइगएसुभएतिहिडीठिअगोहें॥ चोपचकोड
रआनदरोसगरूरहसीभ्रमसों भरिभोहें॥ फे
रतरंगअनंगकोभाइभयोसुरचापज्यों सूरके
१९ सोंहें॥ २२॥ अथविभ्रमहाववर्णनं॥ दोहरा॥ अं

वरबचनकोंजहांविपर्य्ययभोग॥विभ्रमहावसुजानि
येंकहतरसीलेलोग॥यथाल्लडैतीजूको॥आली
तेंयद्यपिआपुनेलोचननिआंजनआंजिसदाईसिं
गारे॥विभ्रमविभ्रमतेंअवतोमृगकेमदसारसों
साधसुधारे॥जानिकुरंगकीजीतिकोंएकमएसु
षतेंसुषमारतनारे॥औरतियानकेनेननिकीसम
तासमुकैंसुरहेंमनडोरे॥२४॥अथविहृतहावर्णं
नं॥दोहरा॥जहांरमनकेपासतेंरमनीकेअभिला
ष॥पूरेहोहितकामतेंविहृतत्तिहिभाष॥२५॥यथा
॥ल्लडैतीजू॥प्रानपियारेरसीलेकेआननकीसुष
मालल्लनाजियभावे॥लाइलगीजबदेरनवैनब
हीअघियांनितआइदुरावे॥नेटिबेकोंभरिअं
कहियें उमड्योहितलाजतेंहोननपावे॥उत्तमलो
हकेभाजनमैंउफनातहेदूधपेजाननपावे॥२६॥
अथकुट्टमितिहाववर्णनं॥दोहरा॥दुषदाइक
कहूंहोतजहांसुषदाइकरसभाव॥कहतरसीले
कबिसकलवहेकुट्टमितहाव॥२७॥यथाल्लडैतीज
॥रदछंडनपीडनघातनषछतगाढेअलिंगिनिचों
पदई॥रसषेदमिलेश्रमसेदचलेंसुरभंगपग्यकीग
तिकंपनई॥रतिकेपतिकीकरतूतसबेतियकेंन
नआनंदरूपभई॥अनिदाहकचंडमयूषप्रभा-

विध्रुकैमैपरिहोनपियूषमईं॥२८॥अथमोहाइतह
लक्षणं॥दोहरा॥आनाकानीदैजहांदरसन
बहुचाहि॥लोकलाजभयत्रासतेंवहमोहाइतनां
॥२९॥यथालछैतीज॥एसोईरसीलोयहमारग
मारगहेवारकपरेतेंजामैंपरनकुदाइमैं॥तूतौ
लैंनीकैंमेनजोचलनदेइडारीहैछकाइजिनि
पुनेसुभाइमैं॥मोहनीकीमोहनीसीउपमानिह
रिवलिमोसोकहाअंतरहैकहीअपनाइमैं॥चा
हगडीचितमैंचितौनिनिगडीनैननिमेंबानगडौ
छातीतातेंकाटोंगड्योपाइमैं॥३०॥अथविछित
हाववर्णनं॥दोहरा॥जोवनआरसरूपमदअ
तिसुकुमारसुभाइ॥तातेंभूषनछांडियेनिहिविछि
त्तिगनाइ॥३१॥यथालछैतीज॥नीकोयहैतिलकु
कुंरुमसारकोलिलाटचिबुककपोलचिषोडाकल्ली
कानकी॥यातेंनसिंगारजुसिरीषसुकुमारअंगि
विधिनातिलोकीकहूंजाकीउपमानकी॥देषोन
फूलकिआईसदकनीठौरठौरवारहैषवाईतुम
वीराहैकयानकी॥मारेजिनिभारनिसिंगारनिउसा
रोतनतजानोजिनियाहिलालपूतरीयषानकी॥३२॥
अथबोधकहाववर्णनं॥दोहरा॥जहांबातकछु
जीवकीछलसोंदेहिजनाइ॥नरूनीपीतमसोंवहे

बोधककहतसुभाइ॥ ३३॥ यथा लालजू॥ नायीनमत
महूं मैं पावलनअंगसंगसोहै हैं न चाहै यौ परैजा केत
नबा नको॥ नितशनिपक्षधारी देषियैविलविलातएे
सोईवढायो ईसतेजवृषभानको॥ सादरावलोक
पानपीवतकठोरअति काननिसरूपसबतपति
निदानको॥ सुषदरसीलोघनीकदमनिकुंजनिमें
पूरतकलिंदीजलसुषकेनिधानको॥ ३६॥ मुग्धक
हाववर्णनं॥ दोहरा॥ अलवेलीलडकाइजहांनरु
नीपियकेपास॥ कहैबातअपानसोंमुग्धकहाव
प्रगास॥ ३७॥ यथा लडेतीजू॥ आपसमानगिगिनै
दुतिकै नितरावरेआनंदकंदहि॥ लोचनकांतिके
चोरकुरंगनिअंकमें राषिसिषावनिछंदहि॥ ताते
कहूं रसैमानरसीलेवैठोअभिमानसंपूरणचंद
हि॥ जानिउपाइबिचारकछुपियपाइनिरारियै
यामतिमंदहि॥ ३८॥ अथ केलिहाववर्णनं॥ दोहू
रा॥ जलथलविपनिबिहारमें जोविलासपहिचान॥
तियकेअतिभावहिकरतनाहिकेलिकरजानि॥ ३९
यथा लडैतीजको॥ प्राणपियामनराषियैकोमन
भावनलेतरुडारनिवावत॥ बाहउचाइनवेअंगु
गुरीपरसैनबहीहंसिफेरउचावत॥ चाहतिहैजि
हिफूलपियामिहितोरिबेकोपियोवहरावत॥
तुंगउरोजननिमेंअटक्यौमनहेरतलालरसीलेन

ष

पावत॥ ३८॥ इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भव
नंदलालतस्यात्मजरसरायनत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्र
विरचितेरससागरग्रंथेहावनिरूपणोनामषष्टस्तरं
गः॥ अथविप्रलंभश्रृंगारविनवनेनहीअनुराग॥
रसकेआनंदहेतुकोंयहीदेतबडभाग॥ १॥ सोरठा
॥ इकपूरबअनुरागमानप्रवासककरुणारस॥
एईचारिविभाग॥ विप्रलंभश्रृंगारके॥ २॥ दोहरा॥
श्रवणसुनेंकेदरसतेंउपजतजहांसनेह॥ सोपूरब
अनुरागकहिदसोंदिसाकोगेह॥ ३॥ इंद्रजालअप
रुचित्रमेंसुपनेओपरतछ॥ पियमूरतिकेचिहनकों
यहेकरतहैलछ॥ ४॥ अथश्रवणाऽनुरागवर्णनं॥
यथालडैतीजू॥ नंदकोकुमारकाहूरचौकरतारसु
षमांसमूहसाररिविधिरचौचितुलाइके॥ जाकोरूप
सोजसीठलैकेकीनेरतिपतिआदिदैकैऔरहूंब
नाइकै॥ रसिकोरसीलोएसेंश्रवणसुनेतेंसुषदा
ई॥ तुनहूकेहीयेकहाएसोईसुभाइहैकैहांहूकब
हूंदेष्योकोंनहिउपाइकरिमेरीसोंकबहूंकहूंमोहू
कोंदिषाइहै॥ ५॥ अथप्रत्यक्षदर्शनानुराग॥ वर्णनं
॥ दोहरा॥ जहांअपनेनैननिसदालषियेमित्रसरू
प॥ सोदरसनप्रत्यक्षहैचितकोलगतअनूप॥ ६॥
यथालडैतीजू॥ आगेधरिमंडलीअनेकरंगगा
इनिकीभृकुटीकमानफेरिलोचनचलाइबो॥ सं

गकेसषानिपरहासनिविलासदैदेउलहितुलहि
गाइवासुरीबजाइवो॥ पीतंबरकुंडलमुकटबन
मालननबानकसुधारिवह्माइदिषिराइवो॥ आ
लीनैकुदेषिकौंनभांतिइहिसांझसमैबननेरसी
लेमनमोहनकोआइवो॥ ७॥ अथइंद्रजालद
र्शनानुरागवर्णनं॥ दोहरा॥ जहांआपुनेमीतको
रचिसिंगारवहुवेष॥ नटदिषरावतपोषके। इंद्रजा
लबहुपेष॥ ८॥ यथालईतीजू॥ केसोबन्योनटरू
परसीलोरीकेसीबनीमुरलीकरमोहै॥ केसेकैमो
रगुदीमुसिक्याइनिहारतमेरियेनीतिनिवाहै॥ मो
हिभयोभ्रमुआपुनोमेछविदेषतरीझबनेनसराहै
॥ मेरीसोंवैसेहीफेरिकरोसकुचीहोंकहाबलमो
दिगचाहै॥ ९॥ अथचित्रदर्शनानुराग॥ वर्ननं॥॥
जिहिपीतमसोंमनुलग्योताकीजोअनुहारि॥ चि
त्रलिषीनितिदेषियेचित्रदर्शव्योहार॥ १०॥ यथा।
लालजूकीरचना॥ लोकनिलोकनिकीरचना
रचिजेनितजंतुअनंतसुधारे॥ कोटिविरंचेविरं
चिरचेपेकितेपरपंचकितेपचिहारे॥ कोकरतारवि
नेकियेदेषिरसीलेरसीलेनिहारे॥ चित्रहमैंतितिं
मित्रकोंदेषियेओरसोंचित्रकुमित्रविहारे॥ अथ
स्वप्नदर्शनानुराग॥ वर्णनं॥ दोहरा॥ जहांनिद्राआ
वेसमतेंसुपनेदेषेमित्र॥ स्वप्नदरसताकोकहेजेज

नपरमविचित्र॥ १२॥ यथा लडैतीजूकौ॥ पीरीप
होत आनु देष्यो है सुपन आली जागत कछू क
चित्त कछू कछु अचेत है॥ सांवरो सो कोऊ जानों व
हत कछ्ठाई नाहि अंग अंग मोहिनी निकाई को
निकेत है॥ मेरी ढिग आइ ने न भौंह तिन चाइ मंद म
सिक्याइ दीनों जानों मो सों कोन हेत है॥ तब ही तें
य रो न जियरे नीरो होत किरतु करै जो घटी जे ऋ वें
सो रेतु है॥ १३॥ अथ अनुराग भेद कथनं॥ अडि
॥ सोई पूरब अनुराग नीनि विधि जानियें॥ नील
राग बताइ कुसुंभ बषानियें॥ पुनि मंजिष्टा राग नाम
ता कौ लह्यौ॥ लक्षण कहूं सुभाइ जु बडे ग्रंथ में कह्यो
॥ १४॥ अथ नीली राग॥ वर्णनं॥ दोहरा॥ ऊपर अधि
कन देषियै मन में अति ढिढ अंग॥ सोई नीली राग
कहु सीताराम प्रसंग॥ १५॥ यथा लडैतीजू कौ॥ औ
रनि जों अति आतुर होत न गूढ गंभीर सुभाइ अत
को॥ नेह रसी ले हियें मधि धारै जो षिल्लैन सुगंध जों
गंधफली को॥ ना पत चै मन मैं रसहानि कों जो दुष
दाइक कंज कली कौ॥ लोकनि तें रुष रूषेर है वित
काह्न मई वृषभान लली कौ॥ १६॥ अथ कुसुंभानु
राग वर्णनं॥ दोहरा॥ जो चटकीलो राग अति चूकि
२२ परें छुटि जाइ॥ जो कुसुंभ सम देषियै यह कुसुंभ को

कोभाइ॥ १७॥ यथा लाडलीजू॥ मैंजिहिं के मनरंजन कों नितकीनी सषी रतिरंग कुंडी सी॥ राषी सदा सुष श्रासहियें नछुटी कुबहूं वह पाटछुंडी सी॥ देषतरूप रसीले विलासभ इकुलका नहुंबाह हुंडीसी॥ लीनी नफेरि सुधांसजनीजु गयोढ़ गिपीन देषोटीहुंडीसी॥ १८॥ अथ जिष्टानुराग॥ वर्णनं॥ दोहरा॥ जोहियतें छुटै नहीं सहज सुहायो रंग॥ मंजिष्टा अनुराग यह जो मैं दरस अनंग॥ १९॥ यथा लडेतीजू॥ जेसीतूं कहति तातें सोगुनी समुझि मो में कहा लों से भारों सीषमति न समानि है॥ बांधि बांधि धीरज अनेक चतुराई क रिदावें राषियत जो लों आपुनी बसानि है॥ मैंनवास नासों भरी पीनकी उमगि बढी लाडिली छिपायेंतें न नैकु ठहराति है॥ आगि कोपरस पीनतेज के विवस भई छूटति हवाई जो अकास चढि जाति है॥ ॥इति श्रीमत्सारस्वत कुमडियेवंशोद्भव नंदलालतस्या त्मज रसकरायतत्पुत्र श्रीरसीले मिश्र विरचिते रस सागरे विप्रलंभ शृंगारानुरागभेदकथनं नामसप्तम स्तरंगः॥ ॥अथ दशादशाभेदकथनं नाम निरूप्यते ॥दोहरा॥ प्रथम होत अभिलाष जहां चिंता सुमरन वाद॥ गुनकथनो उद्वेग पुनि आरु प्रलाप उन्माद॥ २॥ व्याधि दशा जडता मरन ए दशादशा प्रकार॥ वि प्रलंभ में कहत हैं बानन मार तमार॥ २॥ अथ अभि

लाषदशावर्णनं॥ दोहरा॥ मनभावनके दरसकों
रसनेननिनिनचाय॥ चितचाहत अपनेसुषहि सो
षहियत अभिलाष॥३॥ यथा लछैनीजूकीकोब
चन॥ चातुरहोतनआतुरहोलगिघातरहोरति का
तरएहो॥ नोतनहींपहिचानभएतियकेवसि ने न
निवांधिदएहो॥ दीजियेवीचिरसीलोहितूजनजे
सिषवेरसरीतिलएहो॥ जानोकहाअबहींइनमे
दनव्याहेकहूंकिबरातगएहो॥४॥ अथ चिंतानां
मदशावर्णनं॥ दोहरा॥ कैसेकेयतनमिलनुवनें
सुकोनप्रकार॥ यहचिंताचितमेंरहैचिंतानाहि बि
चार॥५॥ यथा ललजूकोबचन॥ जासोंपीनलाभ
आननासोनहींपहिचानिआपुनीलजीली वानि
ओरहीतेंपारीहै॥ कहतिरसीलोकोनकेसेकोउ
भानेंनिर्दयकठोरकरजारजुविचारीहै॥ प्यारीके
मिलनुमरुकूपकोजलभयोतलफेनरषातेकहैकैसे
धोंजिवारीहै॥ चैनफुलवारीमेवजागिचिनगारी
यहमेंनअपकारीचितचिंताअनिडारीहै॥६॥ अ
थस्मृतिनाम॥ दशावर्णनं॥ दोहरा॥ पूरबलोंसमये
कछूसुमरिपछिताइ॥ प्राणतरफरायनेरहेंयहस्म
तिदशासुभाइ॥७॥ यथा॥ कानन बिलासथलीस
२३ नासीवनाइराषीजामेंमारियतजेबियोगीननजेतके

रातेरंगपल्लवबसनदुमडारनिमैं मंचनभरेरहेंजा
मैं अमिषअनंतके॥ रूषरुषकुहूकीपुकारतें
कुहतकामवेहरह्यारषंभकदलिमषमंतके॥
कोनधोबचावेनन्हैमयाकेरसीलेविनुहाथपरी
अवल्लाजेबध्धिकबसंतके॥८॥अथगुनकथनना
मदशावर्णनं॥दोहरा॥व्यापैजहांवियोगदुषपी
तमकोगुनगान॥चितमैंगुनकहुगाइवोसोगुन
कथनबषान॥९॥यथालालजूकोबचन॥मीनका
मकेतुटोगेंषंजनदेदागदागेकेहरीकुरंगनिकी
मारिषारिकाढीहे॥रंभाकोकेरजासोंनिकासो
घनसारसारकंचनकीमूरतिसुहागेडारिडाढी
है॥पंकगतिकेजकोकलंकीद्विजराजकीनोअ
कुसुमनिगेदजंजीरपांइगाढीहै॥प्यारीकेरसीलि
गातकोतिहेचतुराईजिनिताकेडाढिबेकोयोंबिर
चिरुचिकाढीहे॥१०॥अथउद्वेगनामदशावर्णनं॥
दोहरा॥अतिउचाटचितहोतजहांकहूवनमानतचे
न॥सुषदाइकदुषहोतजहांयहउद्वेगसहैन॥११॥
यथालडैतीजूकीअवस्थादेषिकेसषीकोबचन
॥मोहीसोंभेदनदेतमटूकबलोमनहीमनमांहबु
रेगी॥ तूलकीआगिलोंकाकेकीघीतिरसीलेहि
येकिहिभांतिदुरेगी॥फैलीहैनीरसनेहज्योंनेह
लगीजबडीठिनमोरेमुरेगी॥जबआषिननेंगगासे

रु

मवावरीआसुनिकीअवलीनिचुरैगी॥२२॥अथप्रल
यनामदशावर्णनं॥दोहरा॥जहांचित्रकीभावना पि
यमैंरहैसमाइ॥जानतिहैएरनसोसोप्रलापकहा
इ॥२३॥अथलडैतीजूकौवचन॥रावरीपीनमप्याव
टवारजूभूलिगुवारिनिबीचिकहोंगी॥जोसवतेंदु
रिदेषतिहोंहरित्योंइकबारजोंअंकलहोंगी॥एसें
कहाकछूबावरीहोजुमैंआपुनेप्राननिआपुदहों
गी॥२४॥अथउन्मादशाबर्णनं॥दोहरा॥चेतन
औरअचेतकोंजहांगपानछुटिजाइ॥रोवतिहंसत
निलज्जह्वैसोउन्मादबताइ॥२५॥यथालडैतीजू
कीसषीकोबचन॥डीठिह्वैडीठिलगावतिपीठिदई
अविनीदिकैरैढिगदूरै॥भाजनलाजतजेगजराज
जोंगावतिरोवतिहासविसूरे॥वावरीरूपठगोरी
लगाइभलीमईलालकियोपनुपूरो॥लीनोछिडा
इमहामनिमानकहेउहिंवालकोंनेहधनूरो॥२६॥
अथव्याधिनामदशाबर्णनं॥दोहरा॥ननुकृशताना
परलापजुरआंसूबर्नबिबर्न॥दोहरा॥ननुकृशता
परलापजुरआंसूबरनबिबर्न॥व्याधिदशानासों
कहतसुननसुहाततनकर्ण॥२७॥यथालडैतीजूकी
सषीकोबचन॥अतिपियराईनितबाढेदुबराईनैनआंसू
केप्रवाहभिजवतिचीरसाटिका॥प्रबलअनलना
२४ पतचईविकलपरीदावकीसीदाधीमानोमालि

तीकीबाटिका॥धीरनरहनवाकीआरतिबिलोकैं
बलिदीरघउसासअतिचितकीउचाटिका॥लाल
नुरसीलेभाइआगेंहीजिवाईतेंहीवारोतेसेंआ
जचलिदेषिवाकीनाटिका॥१८॥अथजडतानामद
शावर्णनं॥दोहरा॥जहांबिरहकेदुषबढेंजडह्वैजा
तशरीर॥फुरेनकछुसुभाउबलसोजडतामतिधी
र॥१९॥यथालडैतीजू॥लागेनलवेलीछिनचैनन
गहनधीरनरफनरफरातवैहरवयारकी॥चंदनच
ढायेंआगआगिकोपरसमानोवहसिवहरावैन
होधाराहगवारिकी॥चंचलचतुरसोईअबलासि
लासीपरीमदनमतंगतोरिनारनरुडारकी॥केस
करसीलेह्वैबिलोकियेजूमहाराजराषोलाजआ
जलालमेरीमनुहारिकी॥२०॥अथमरननामद
शावर्णनं॥दोहरा॥बिरहपीरतेंदुषबढेछुटिजाइ
जहांप्रान॥सोईमरनबषानियेबरननहींरसहांनि
॥ताकोंबरनतहैंरसिकएसीभांतिबिचारि॥आगें
छिनमेंहोइगोकैयाछेअनुहारि॥२२॥यथालडैती
जूकीसषी॥कहींगेकिनीचयहबीचिआनिपारति
हैनकुनोतिहारेभलेआपुनीभलाईहै॥वाकेतोअ
समसरबेरुपस्योमारिबेकोंवाननिवरषिहियेंब
डवासीलाईहै॥नागरनवलयहबूडीगुनसागरमें
लेहुननिकारिकैहौकोंनचतुराईहै॥नेहतोअने

कनिसों होत अरु होइ गोई डोंडी जों गरें डारि काहू
दीनी नदुहाई है ॥ २३ ॥ दसों दशा ये होत नव जव पूर
बअनुराग ॥ औरे भांतिहूं होत है ताके कहत बड़भाग
॥ २४ ॥ ॥ इति श्री मत्सारस्वत कुमडिये वंशोद्भव नंद
लालतस्यात्मज रसकेरायन त्पुत्र श्री रसीले मिश्र
बिरचिते रससागर ग्रंथे पूर्वानुराग ते दशा दशा वर्ण
नं नाम अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥ अथ अन्यमते दशा द
शा वर्णनं ॥ दोहरा ॥ चक्षुराग कहु प्रथम ही चित्रसंग
संकल्प ॥ निद्राछेद न सुतनता बिषय निरुत्त अन
ल्प ॥ १ ॥ त्रयानास उन्माद पुनि जड़ता मरनो अंत
॥ दसों दशा ए प्रगट हे क्रम सों गावत संत ॥ २ ॥ अथ
चक्षुराग वर्नन ॥ दोहरा ॥ जहां पीतम के दरस की ने
ननि में अनि चाह ॥ चक्षु राग तासों कहे हें बरन सुना
बत ताहि ॥ ३ ॥ यथा लड़ैतीजू की सषी को बचन ॥
तुमतौ छुनक छै लगे लल गे डोलो चाहौ आवत न
सों चक कछू कें हूं ब्रजसोर को ॥ कोमल कमल रुपभां
न की लली को हियो पेठि जात वान जों चितै वो दृग
कोर को ॥ वैर है कि नेह प्रभु तेरी न ही जानी जाइ वा
हि देषि साधि लगी जैसे निधि चोर को ॥ बार बार दी
न भई मांगति हों ओली ओड़ि छाडो बलि जांव कै
हूं जैवो उहि ओर को ॥ ४ ॥ अथ चित्रासंग नाम द
शावर्णनं ॥ दोहरा ॥ एक वार पीतम निरषि रहे जु नित

लुभाइ॥ निसाद्यो सलागेलगन चित्रासंग सुभाइ॥५॥
अथ ललडेतीजू॥ आली अलबेली बैस सरुधें ही सुभाइ
वृषभानकी कुंवरि वान काम जू को मोहना॥ ढाढी हीं अ
वानकहीं चाहति हो वाह्यो हरि आंषिनि में पैयो न हिर
ह्यो ओर जो हना॥ छकी सी छबीली ठोर गहिरही वाव
री सी वेदण चिहारे नारी देषें कहैं मोहना॥ देषें ई बनेगी
चलि कीजियै उपाइ कछू मो दिनी सी डारि मनमोहि ग
यो मोहना॥ ६॥ अथ कल्प नाम दशा बर्णनं॥ दोहरा॥
मनलागे पियसों जहां उपजत हिय अभिलाष॥ कोटि
मनोरथ मन करत सो संकल्प कहि भाष॥७॥ यथा ललडे
तीजू को बचन॥ जो हरि हेरि कियो बसि मोहि त्यों आ
पुनहू बसि कै चित लावै॥ पंकज नैन मयेक सो आन
न देषनि संक कै अंक लगावै॥ वे रनि रंगन रंग महा
निधि केंहू रसीलि सनेह जनावै॥ जो करतार करै क
रुणा तो सबै यह बान अबै बनि आवै॥ ८॥ अथ नि
द्राछेद नाम दशा वर्णनं॥ दोहा॥ जहां बिरह की पीर तें
होइ नीद को नास॥ निद्राछेद सुजानियै। बरनो बुद्धि
विलास॥ ९॥ यथा ललडेतीजू को बचन॥ जे कमला क
मलापति हूं कमलासन आपुने हूं करि जाने॥ देवनि
हूं सीस चढाइ महा सुष मानि धिदे सन माने॥ वे ईरसी
ले सरोज सषी इनि नैननि दार दीके सुष साने॥ छी
न लई अब नीद उन्हो निसि रोवत सोवत मे पहिचाने

॥२०॥ अथ तनुता नाम दशा वर्णनं ॥ दोहरा ॥ निज नि
नद दुसह वियोग में जो अनिवदन कलेस ॥ होय दूबरी
देह यह तनुता कहै सुबेस ॥ २१ ॥ यथा लडैतीजू की स
षी को बचन ॥ सोचन छीजत छीन भयो तन आवन ई
छन नीठि कहीनें ॥ कौन के कीजे उपाइ कहो बलि सी
चौन जाति सरीर अमीनें ॥ चाहै भई सुरलोक की पा
हुनी प्यारी तिहारी उदास है जीनें ॥ कामकसाई के हा
थ गहाई सताइ भले किये सो तिकी चीनो ॥ २२ ॥ अथ
विषय निवृत्ति नाम दशा वर्णनं ॥ दोहरा ॥ रूप गंध रस
परस पुनि सबद सकल सुष देह ॥ तजत इहां इकबार
ही विषय निवृत्ति विदेह ॥ २३ ॥ यथा लडैतीजू की सषी
को बचन ॥ नीद भूष प्यास दुति मति लाज चतुराई क्र
म क्रम सब आरि हारयो ना विनु अचेत सबै विषै निज वा
नि कै ॥ ॥॥॥ दई तिय जाति जानि कै ॥ मन हूं चपल लषि
सुरग पतार डारयो ना विन अचेत सबै विषै निज वानि
कै ॥ सूने भौन मैं रहौ है जो अकेली इकै मिलि वे की
आस लगि पीत पहिचानि कै ॥ लाल नु रसीले जू छ
बीलो तोल जीली जानि अजहूं मिलन नाहि कौन के
सुकानि कै ॥ २४ ॥ अथ त्रषा नाश नाम दशा वर्णनं ॥
दोहरा ॥ जहां नेह बढवार तें छुटि जात जगजाल ॥
२६ त्रषा नासना सों कहत जे कवि कुल सिरताज ॥ २५ ॥

अथ कीर्त्तिजू की सषी को वचन॥ कैसें कुलवंती सत सील सों रहन पावै कुल दाग्य अनेक बहिकावें रीति लै नई॥ कालिंह की गुवारि कीर सी जू लै जू छानी वाति मोहन के संगमति जैसी मति है भई॥ कुंज की गली नी ठि नीठि केलु गोई ल्याई राषी षान पान तें अनेक चा सदै तई॥ तारमधि मूंदि महतारी रष वारी कीनी लाइ पटनारी व्रजमारी को कलै गई॥ २६॥ अथ लज्जानाश नाम दशावर्णनं॥ दोहरा॥ पीतम के रस में मगन चित न छाडत है लाज॥ लज्जानाशन तिहिं कहत जहां काम को राज॥ २७॥ लडैती जू को वचन यथा॥ मोस मुझै समुझै न हियें समुझै विनु मोहि कहा समुझावै॥ सीस रहैं नित नेह को भार सु लाज के भारहिं कोन उठावै॥ कौन हंसै जिहिं को हैं सिखावत मोहि हंसी सपनें हूं न भावै॥ जाहि न भावै भटू पति की रति ताहि कहा पति की रति भावै॥ २८॥ अथ उन्माद दशा वर्णनं॥ दोहा॥ जहां विरह वाढत अधिक छुटै लोक मरजाद॥ जो मन आवै सो करै दसा वहै उन्माद॥ २९॥ यथा लडैती जू की सषी को बचन॥ सार सिंगार बिगारत सी तजमान मनोरथ है पुज वैसी॥ आपुन गासमाय तिसी चितता पतमीन बढाइ अनैसी॥ चाहति काहू दसा जो भई अब वैरी के वैरी मै होइ न जैसी॥ केलि कथा नि अलोपति सी परलोक कथा नि चलावन रै

सी॥२०॥ यथा॥ मृदअमृदजनावतिसी सुनोमृटम
ईकछुटूटतनैसीहै॥ चौकनिकोपतिचाहिरसीलैव
कीनजिल्लाजहिरोइहैसीहै॥ आनिकीआनिकेहे
मुषनेंउठिधावनमूलिभ्रमैजिकसीहै॥ कामकल्ला
लकेहाथपरेवहवालानोहाल्लाकेहालयसीहै॥
॥२१॥ अथजडतानामदशावर्णनं॥ दोहरा॥ तनम
नकीकरनीकछूकरनसकलजहोकोइ॥ सोजड
तादुषसुषमिलेचित्ररूपसमहोइ॥२२॥ यथालडे
तीजूकीसषीकोबचन॥ नेनचपलाईमृगमीनषंज
रीटलईथिरताछिनाईपलहीमेंकेजतोरतें॥ बचन
निकाईमधुराईदोषलैपलाईमुकतावसाई आन
कोरकनिहोरतें॥ बेधबेधबाननिसोंकीनीहैअव
लदेहनैकनरहीहैमतिगतिअतिचोरतें॥ पानवतु
राईविरचिरचीपचिसोईवामजडकीनीकामजडजो
रतें॥२३॥ अथमरननामदशावर्णनं॥ दोहरा॥ बि
रहवियाबढवारतेंतजतप्राणजहांदेह॥ मरनदशा
तासोंकहेपूरनप्रगटेनेह॥२४॥ मरनकहतरसहो
निहैंतातेंकहतनकोइ॥ पेभावीकछुबरनियेंरस
उपजावतसोइ॥२५॥ यथालडेतीजूकोबचन॥ का
मतिहारेरसीलेहितूकरिप्राणपियारीकेबोलपठा
२७ ए॥ बारहिबारपुकारपुकारकुहुचितलेनमहाभुजु

कुलाए॥ जानवलेउढिग्रानऔवेनवनैंइहिवार
अवारलगाऐं॥ जोकछुचाहतदेनसंदेसोनोला
लकहौमुषबानजनाऐं॥ २६॥ विरहदशाजेहो
तहेंतेसबदईबनाइ॥ औरभांतिद्वादशाकहतजे
रसकनिकेराइ॥ २७॥ इतिश्रीमत्सारस्वतकुम
डियेवंशोद्भवनंदलालतस्यात्मजरसिकरायत
त्सुतश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरससागरेदशादशा
निरूपणोनामनवमस्तरंग॥ ९॥ अथमानश्रृंगा
रवर्णनं॥ दोहरा॥ जहांप्रेमवाढतप्रवलउपजत
हैअभिमान॥ होतचित्तकोंछोभकछुसोकहि
यतहैमान॥ १॥ जोदेषतिमैंकोपहैसोकहियत
अभिमान॥ एकप्रेमतेहोतहैअरुअपराधनिदा
न॥ २॥ प्रणयमानपहलेंगनतअरुईर्षाहमा
न॥ तियकेउपजतईरषाप्रियकेप्रणयवषान॥
॥ ३॥ अथप्रणयनामवर्णनं॥ दोहरा॥ जहांनका
रनकोपकौहोतमानअनयास॥ प्रणयमानता
सोंकहतपूरनप्रेमप्रकास॥ ४॥ यथालडैतीजूकी
सषीकोवचन॥ अपनेंकरलैवहकुंतलभारसं
वारतहीललनाकवरी॥ अभिमंडितछूटिपरीभ्र
मतेंतुमधाइउचाइनहाथधरी॥ नवतैंजियमान
निरादरसोंहियमानिवढावतिरोसभरी॥ चलिले

हुमनाइरसीलेसुभाइभेरेंअँसुवापरिजेकपरी॥
॥५॥ अथईर्षानाममानवर्णनं॥ सोरठा॥ होतई
र्षामानसौतनिकेंसोंपियकेंरमैं॥ ताकोंकहतसु
जान॥ तीनिभेदकेतियनिमें॥६॥ दोहरा॥ श्रुतिद
र्शिनअनुमानतेंएईतीनिप्रकार॥ होतचित्रमेमा
नतदपियकोदेषतजान॥७॥ अथश्रुतानामभा
नश्रृंगारवननं॥ दोहरा॥ औरतियाकेरसरग्योजो
तियजाननिपीय॥ श्रवणसुनेअनुमानतेंतोरिस
उपजइीय॥८॥ अथलडैतीजूकीसषीकोबचन॥
लालसुनोतुमआपुनेआननतेबतियांमुसिका
इनिकासी॥ कानमेंआनपरीविसुसीपहिलेंकि
नहींतुमरेचितमासी॥ लेहुमनाइअबैवहुरोंल
हिहैहठिमानमयंकसुधासी॥ छाडिरसीलेविला
ससबैमुरिबैठिरहीमहिमौनउदासी॥९॥ अथह
ष्टानाममानवर्णनं॥ दोहरा॥ औरनारिकेरसवि
ध्योजोतियदेषेआप॥ तबउपजतहैईर्षानीचनिके
परताप॥१०॥ यथालडैतीजूकोबचन॥ पागकेपेच
सुधारतपेचसोंमाथेंदैहाथप्रनामजनायौ॥ जानि
गईवहजानिसुजानरसीलेमनोभवभावसुहायौ
॥ मोंगकेमोतीसुधारतहीप्रतिऊतरदेतवनोषब
दायौ॥ ताहीसोंकेलिकलाकरियेंपियबादगेंवा

रतिसों चितु लायो॥२२॥ अथ अवमान तें मान
शृंगार वर्णनं॥ दोहरा॥ मान होत अपमानतें ता
के नीनि प्रकार॥ नाम लियें सुपनें व कैं रति के चि
ह्न निहारि॥२२॥ अथ नाम तें लडैती जू को॥ जहां
के लिअ अवास विराम के काम को लाल रसीले नि
वास कियो॥ ललना करतूत करी रति मैं तिनको
नुम माल ले जाय कियो॥ उनने कौ करुना करि कै अ
बहूं वतियां सुषदेन को नैम लियो॥ रसनाम गहे
नुमना मरचे रस वाद क्रमै रस वाद कियो॥२३॥ अ
थ स्वप्न के प्रलापनें॥ लडैती जू को मान ईर्षा शृंगार
वर्णनं॥ यथा॥ सोवत हैं परजंक परे कहूं लालन नींद
मई इत गाढी॥ भामिनी को कुलषी सुपनें जा सोंन
ई रस रीति है वाढी॥ ताके सनेह सनी बतियां जे प्र
लाप मए मुष तें हरि काढी॥ कान परे तिय की छतियां
भई ग्रीषम दौंव की डाढी॥२४॥ अथ रति चिह्न तें दो
हरा॥ जो आवें पिय आपुनें कैं औरसों केलि॥
ताको चिह्न निहारि हिय उपजत रिस की वेलि॥२५॥
यथा लडैती जू को बचन॥ घूमि बढी तन आरस रे
ड तन चित हूं की गति मोहमढी है॥ बोलन बोल कछू
नैं कछू दिग हूं दिग ती मानो छीव चढी है॥ लालनु कैं
न सु भामिनी भोगिनी जाही कै भोग सों प्रीति बढी
है॥ जानति हों इन नैननि मैं निहि के रस की विरुआ

निवटीहै॥२६॥दोहरा॥इहिविधिमानसिंगारहू
मदीनोभेदजनाइ॥सुगमपंथतेअबकहूंनोकों
भेदलषाइ॥२७॥ ॥इतिश्रीमत्सारस्वतकुमउिये
वंशोद्भवनंदलालतस्यात्मजरसकरायतत्पुत्र
श्रीरसीलेमिश्रविरचितेरससागरेमानश्रृंगारब
र्ननोनामद्वात्रिंशस्तरंगः॥१॥अथमानभेदकथ
नं॥दोहरा॥तीनिभांतिकोमानहैलघुमध्यमगु
रुभेद॥तिनकोकरतबषानवहुजेजानतरसवेद
॥२॥अथलघुमानवर्णनं॥औरनारिसोंपियरच्यो
सुनैंतियाजोकान॥सषीसहेलीदेंकहेंनहांउपज
तुलघुमान॥यथालालजूकीसषीकोबचन॥जेर
तिरंगसमेंसुनिवैनमानिनीसीषपीयूषप्रतारे॥
रागअनेकजहांसुरमंडलमूरछनागुनग्रामविहा
रै॥मानतसांचहियोजिनकीसुनिवानसवैनिज
काजसुधारै॥रावरेकाननिकोंतिनकोंभरिरूठि
तवारिगोंवारिविगारै॥अथकोतककोंलघुमान॥
लडैतीजूकोयथा॥सौतिकेसंगजेंदूषितिसोंपियई
ठकींडीठिसोंडीठिनजोरी॥छाडिरसीलेविलाससस
बैरुषरुषोकियोमुषमोहमरोरी॥प्यारीकेपाइनि
केपरसेंउलह्योजूअसोककलीतिहिनोरी॥सी
सधरीजवनंदकुमारविचारिकेनारिनवैरिसछोरी
॥४॥अथमध्यममानवर्णनं॥दोहरा॥औरतियाको

नामसुनिकैरतिचिहनविलोकि॥कैसुपनेंपरलाएसु
निमध्यममाननरोक॥५॥यथा लडैतीजकीसषी
कोबचन॥छैलछबीलेछपायेहुनोछलसोंछविके
सुनोछातीमैंलछन॥मोहिनोवेधपरीछनसोंकियो
भामिनीकेमनकोंअवरछन॥जानैदईअवमानि
हेकोंनरीयाविषहारीकेमंत्रकेअछत॥दारुनमा
रुनहेतुभयोअहिनछकैलसोंलालनपछत॥
॥६॥अथजारिदर्शननेंमध्यममानवर्णनं॥लालन
कीसषीकोबचन॥लडतीआगे॥काहहेंकछुआ
गिकीआगिनेंआपुननाइगहैसरलाई॥तोहिदई
सिषतोपलगाइकेकीजेकहाजुउहैयहभाई॥मोह
नवैद्योअधीनतिहारोजीमैंनगहेंमनसोधरुषाई
॥लेहमनाइजुचाहैंभलोजबलोंनसुनेंकहूंकामक
साई॥७॥अथगुरुमानवर्णनं॥दोहरा॥औरनारि
सोंनेहलषिकेसुनिश्रवननिनाम॥उपजतहेगुरुमा
ननहांपंडतकरतबषान॥८॥यथालडैतीजकोबच
न॥अपनेंचितकीहितकीसबगांठिषुलेहरईपरई
छतियां॥कहनावतिकोंनजुआएमिलैचहियेपठ
ईजिहिकोंपतियां॥हमपैकहिक्योंवनिआवतिहेउ
हिभांतिकछूरसकीबतियां॥जिहिसोंतुमलालमडी
वरचावलिजागेहुतीवहकोंनतिया॥९॥अथश्रवण
तेंगुरुमानवर्णनं॥लडैतीजूकेवचन॥नैननिकेनिरषें

विनलोकपत्यानहितूजनपत्रकेवांचें॥पूछतिहोंव
लिजांउकहोकिनकोंनकीडीठिपरेंछठपाचें॥आव
तिदेषिसषीसिगरीनितनैननननेहचरित्रकेराचेंरू
ठीसबैतिहकीकहनावतिहोतुमहीहरिसोंहकेसां
चे॥१०॥अथगोत्रस्थलननेंलडैतीजूकौ॥जाके
मिलेंविनुव्याकुलहैनननमाननआपुनेशानविनाहै
॥अंतरपेमनिरंतरभावचकोरजोंजाकीचितोनसरा
है॥जाकेविलासनिकोंसुषमानिरसीलोमयूषसुधा
नसराहै॥जाकीकहीरतियाननियाबतीयांछतीयां
कतियाअवगाहै॥११॥अथगुरुजननतेंगुरुमानला
लजूकोलडैतीकीसषीकोबचन॥छंदतसंगघरीकि
मईनहीबोधसषीफिरिबोलपठाई॥बैठीलुगाइनिमें
बतरातिनऔसरपाइसमीपसिधाई॥एनियपोरिप
रीतिहियेगहिमोंनरहेमनसाधरुषाई॥हँसिलीजि
येकंठलगाइविहारीजूराधिकाआपमनावनआई॥
॥१२॥दोहरा॥इहिविधिमानसिंगारकोबरननहेंबहु
भाइ॥अपनेअपनेंग्रंथमेंकविजनदेतजनाइ॥१३॥
अलपजतननतेंजानलघुमध्यमकीनेसोंह॥मिटतमा
नगुरुकष्टतेंअधिकतनेनीमोंह॥१३॥१४॥ ॥इतिश्रीम
त्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भवनंदलालतस्यात्मजरस
कराइतत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरससागरेमान
३० भेदवर्णनेनामएकादशस्तरंगः॥अथमानमोचनत

मघ ह्वैअैसो मोरि कै सैं निहोरैं पिय दीन भए भाष्यौहै॥१२॥

पाइ वर्णनं॥ सोरठा॥ साम दान पुनि भेद। प्रणति उपेछ्छा जानि यैं॥ षट उपाइ के षेद। हरें प्रसंग विध्वंस जुत॥१॥ अथ साम उपाइ वर्णनं॥ मन के मोंहन वचन कहि अधिक सनेह जनाइ॥ मान छुटावै बाम कौ सोई साम उपाइ॥२॥ यथा लालजू की साम सषी को बचन॥ ऐसो नषभाव को ऊमीन ऋतु नायक को सरद सें पूरण सुधाकर के धाम को॥ जीतिबो तिलोकी को स्थ्यार रस बफूलनि के रावरो सुजस सुनि पायो हो विराम को॥ रूसे सुनि तोहि सो त्तो बिलष बदन ह्वै कै वा नु धनु डारि द्यो चरन पुनाम को॥ हाहा न जि मान पर काज ही के कातं प्यारी तेरी मुसिक्यान ही मैं काम होन काम को॥३॥ कवित्त॥ इती कहा षोरि जोर रही है सषीयें मनावत गनावत रसीले सीष हारी पै न नेकु नें सनेह अभिलाष्यौ है॥ तिहूं लोक की निकाई पाई जो दई की दई ता तें गरबाइ मरजाद सिंधु नाष्यो है॥ कौन तें चूक परै कौन होत मानवती तें ही मान कपि को सो छोना करि राष्यो है॥४॥ यथा लडैती जू को साम सषी के बचन॥ भावे न कलेस लेस सूर की नयन मैटै मोर मै बढाइ मोद पूरे कैरे काम है॥ गरज गैं भीर जा की पोषन करन सुष जीवन को मूल बनमाली जा को नाम है॥ वासमैं निसा कौ रंग राषै रस धाराठौर रूषे रूष चाहै ताहि सोई मंद बाम है॥ प्रानप्या

रेमोहनरसीलेजूतिहारीसोंराधाकेबिलासकोनिवा
सघनस्यामहै॥५॥अथदानउपाइवर्णनं॥दोहरा॥
भूषनबसनकछूकअरुजहांदेतउपहार॥सोईदा
नउपाइकहुप्रेमरीतिमनुहारि॥६॥यथालालजूको
दानउपाइ॥बचनसखीको॥हौंसरहीबहुबासरतेंपचि
हाररहेनचलीचतुराई॥हौतअरंभसमैइकवारही
अंगमेंसातुकभावनिकोई॥बामअनेककोनामल
येउपजोनिरवेदनवेहीवनाई॥मालतीमालरिसा
ललेहाथगुपाललैसाथमनावनआई॥७॥यथाल
डैतीजूकोदान॥उपाइबचनसखीको॥सुरभीसुगंध
सारगंधसारघनसारकुल्लसारमदसारसुरसरसा
इयै॥अंबरजवादिमेदअगरप्रसेदभेदछेदहिहरत
निरवेदहिमिटाइयै॥केसरमिलोहैजानीकेवराहलोहै
वेलिवासितखिल्यौहैमहासौरभसुहाइयै॥चूककै
छुपाइयेनोमोहूकोंबताइयेजूप्यारेयहअंगरागप्या
रेअंगलाइयै॥८॥अथभेदउपाइबर्णनं॥दोहरा॥
मानवतीकीसखीकोंजोपियलेअपनाइ॥वहेछुड
वैसोईभेदउपाइ॥९॥अथलालजूकोभेदउपाइ॥
सखीकेबचन॥सखीह्वैरिसाइत्यौरीतानतिहैसन
राइमेरीसखीलागतिहैनीवकोसोकोरुहै॥जानति
३१ हैआपुनीह्वैलालकीसुहातीकहैआपुनीछवीली

कीसोंहमोहिडरूज्यौरहै॥ छबिलैतिलोकीकीसिरी
बसुकुमारिज्यांगिरचिपचिरच्यौहैबिरंचिरूपमोरुहै॥
निरदैकसाईवहज्यसमसरघाईयहसरदजुक्काईको
रूसिबेकीठोरहै॥२०॥ यथालडैतीजूकोमेदउपाइस
षीकेबचन॥ नृतोवृजमंडनपचंडकोविहंडनुहैकीजे
मानुषंडनुजोकीनामधफमंगले॥ मोहनसुजानरस
राजकलाकेनिधानमानियैंश्रनामसषाजानुमधफमं
गले॥ वंजुलकेकुंजमंजुमोरपुंजगुंजरनवंदीजनवि
हंगसुमनमधफमंगले॥ राधिकाकोंसंगलैत्र्यालिंग
नकेरंगलैविहारियैत्र्यनंगलै।विचारिमधफमंगलै॥
॥२१॥ त्र्यथपणतिउपाइबर्णनं॥ दोहरा॥ प्रेमकामञ्ज
पराधतेंगहतपियारोपाइ॥ पूरनप्रेमपभाइतेंनिय
हूंलेतमनाइ॥२२॥ यथालालजूकोपणतिउपाइ॥
तोजोंमनोजलयैंसरचांपनवाइचढाइटेकारननाे
कें॥ त्योंत्योंरिसातषिस्यातहिरातकटैंसतकोटि
पिनाककीनाकें॥ वैरिविदूषनपोरषभूषनईसरसुरे
सलगेपगुजाकें॥ सोईगुपालरसीलोभयोवसरसी
सपनामककैत्र्यबलाकें॥२३॥ यथालडैतीजूकोप
णतिउपाइसषीकेबचन॥ कोलगिबैसेंउदासहै
तोरिहोनाकीकुहागतिहैजुहिरानी॥ वारकत्र्यापनें
हाथदुकूलसोंवीजनोत्र्यादरुदेहविनानी॥मेंन

कीआगिनापतचैहियतेंउफनाइचल्यौहमजानी॥नैन
निह्वैनिचुरैंबनिताकेरसीलेंपनेहगुलाबकोपानी॥॥
॥२४॥अथउपेक्षाउपाइवर्णनं॥दोहरा॥अतिउत्त
मकैप्रीतिबससजनीरहतिरिसाइ॥मुषपैकछुनजा
नियैंप्रीतमलेअपनाइ॥२५॥यथा॥लालजूकोउ
पेक्षाउपाइसषीकेवचन॥ऐसोईभागरच्यौकरतार
जूसोतनिकौंलवलेसनभावै॥कौनइतौहठहैरगु
साइनिजाहिपियाइहिंभांतिलडावै॥देषिनैचारन
आपुनपौपगधूरकपूरजेंआपनिलावै॥और
कोमानकरेअपमानपैरावरौमानगुमानवढावै॥
॥२६॥यथाललैतीजूकोउपेक्षा॥रूषेलषेमनमोह
नजूवृषभानकुमारिजहांदिगआई॥ष्यालहिष्याल
सेंआपुनेअंकलेवीननवीनप्रवीनवजाई॥रोह
अरोहकेभेदनिमेंप्रगटीसुरमंडलीकीप्रभुताई॥
ताननरंगसोंमूरछनामिलिग्रेरिलयौमनमोहकन्ह
ई॥२७॥अथप्रसंगविध्वंसउपाइवर्णनं॥दोहरा॥
भयउपजेकेचित्तभ्रमइनतेंछूटैमान॥सोप्रसंगवि
ध्वंसजुतपंडितकरतबषान॥२८॥यथालालजूको
प्रसंगविध्वंससषीकोबचन॥बालमृणालसिबा
लकेजालसिरोरुहचंदनचंदकोचूरो॥राषीहैसों
 जैंबनाइसबैसजनीसिगरीदिगतैंनहिदूरै॥कौ

नहिकामकितेकुकलानिधिआयोजुकालहूंबांधि
गस्तूरो॥ कानरहैनहिराइगुसाइनिनूकरलेहठ
कोव्रतपूरो॥२८॥ यथा लडैतीजूकोप्रसंगविष्वै
स॥ आएनआपुनहींउहिबाररहेकितहूंनउतै
चितुदीनो॥ भामिनीनोहियकीदुबरीजिनिजै
सोकह्योसुनिनेसोईलीनो॥ आइकहीकछु
औरकीऔरगयोबिसजोंचदिकोपनवीनो॥
मैंकरिराख्योहुतोतिनजोंउनिपायनिफेरिपहा
रसोकीनों॥२९॥ दोहरा॥ इहिविधिमानमुचाव
नोकरतरसिकसिरमोर॥ षट्विधितोएसवक
हतऔरैकहतसुओर॥३०॥ इतिश्रीमत्सार
स्वतकुमडियेवंशोद्भवनंदलालतस्यात्मजर
सकरायतत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरस·
सागरेमानमोचनषट्उपाइवर्णनोनामद्वाद
शस्तरंगः॥१२॥ अथविरहरूपीप्रवासश्रृंगार
बर्णनं॥ दोहरा॥ लोकलाजव्यवहारबसनाय
कजाइविदेस॥ सोप्रवासकहियैतहांबहुविधि
बिरहप्रवेस॥१॥ प्रथमदशाजेकामकीजेकहु
कहीसुनाइ॥ तेसबहोतप्रवासमैंप्रगटेविरह
प्रभाइ॥२॥ यथा लडैतीजूकौविरह॥ हहराइज प्रवास
बैमुरछ्यातहियोनवजाइकहूंछपिसेगरलै॥

अगटीफिरिचेतसँभारिभयेंनलफावतआपुन
पैविमलै॥ पहलेंदिनहीछलिरीतिलईइहिपीन
मलागतमोहिभलैं॥धिगप्रानअरेनजिसाथ
रहेंमनमोहनजूपरदेसचले॥३॥यथालालजू
कोप्रवासविरह॥श्रृंगार॥भुजमेलिगरेंमुषसों
मुषजोरिरहीनिसिमैंअबक्योंरहिहै॥ननफूल
निहींकुम्हिलातउठीअबकामकेफूलनिक्योंस
हिहै॥मुरछातिविरीदलषेंडहियेंलगिसोबिरहा
गनिक्यौंदहिहै॥अजहूंजियप्राणपियामिलिये
चलियेनहिलागकहाकहिहै॥४॥अथरसाभास
बर्णनं॥दोहरा॥जोअनिमानबदेहियेंगनेनके
भाइ॥रसाभासतबहोतहैबरनहुताहिबनाइ॥
॥५॥यथालालजूकोरसाभास॥निंदतचंदहिमंद
कहैमलयानलहूंबहुभांतिउचाटै॥भौंरकचंडसि
लीमुषआपुनेलैयटकेपियकेगुनटाडै॥होत
वसंतउदासतियालषितोरतआषिनिओठनि
काटै॥वामदसालमानकीलालमेंकामषिकैध
रिहाथललाटै॥६॥यथालैडेनीरसाभास॥पी
नमतेंकछुचूकपरेसुभभामिनीमानेंरिसालस
मानें॥नेहरिसीलेनिहारतआपुनमानसकीक
३३ हीमानसमानें॥जोरसकेबसतेंननजैरिसतऊ

माननहीं विसहीकीसमानें॥ नोविसराइफटैपयजों
वहमानअलीअपमानसमानें॥ ७॥ अथविरहातुर
श्रृंगारबर्णनं॥ यथालडैतीजूको बचन॥ सुषदाइकनं
दकुमारहितूपहिलेंतजितोहिपयानकियो॥ नितका
मकुचीहूंभीलकुसाललैबानसरासनताप दियो॥
नितनतूतनरूपसहीकुमदसाकबहूंनहलाहलघो
रिपियो॥ इतनेंअपमानसहेजियतेंसुकहाननमेंर
हिलाभुलियो॥ ८॥ यथालालजूकोविरहातुरश्रृंगा
र॥ अतिसुकुमारसदासुषकीकरनहारीनैननिमें
रा षिनितहीलडाईही॥ चांपिचांपिपांइहाथआदर
सोंआवतिहीप्यारीकेरसीलेलषिकौतकुलुभाईही
॥ बिरहबिपतपरेछाडतिनभाजीकहूंदुसहदुषनि
हियेंअतिअकुलाईही॥ नीदहूंहमारीबजमारीरे
बिलासीविधिएसीजमसीनिसामेंकैसीसुषदाई
ही॥ ९॥ अथपत्रिकावर्णनं॥ दोहरा॥ अपनेमन
कीभावतीकेहूंकहीनजाइ॥ कागदमेंलिषिभेजिये
पत्रीकहुकबिराइ॥ १०॥ यथालालजूकीपत्री॥ ॥
आयोवसंतमहारिसवेतसुचाहतहैनितकामहि
तूजे॥ फूलसवैबनयौनविहागतभौंरगुंजारतको
किलकूजे॥ चंदनचैबिषकंदभयोवृषभानसुतादु
चितिजिनिहूजे॥ मेरेतोप्रानमहादिठहेंजिनिगुरुके

ज्ञानकोटिहूं पूजै॥२२॥ यथा लडैतीजू की पत्री॥ तुम स
बलाइक रसीले सुषदाइक हौ बिनती हमारी लिषी है
पाकै निहारियै॥ केतक विनीत होत जात है अब दिन
आवन बनन नांह कहा धौं विचारियै॥ कौलौं सहूं सू
लन दबु उवा नल समान दुष आइ अकुलाइ लीजे
सुरति सँभारियै॥ ऐंडे भए काम के बसे तय हपैंडे षस्यौ॥
माया जो बिसारी जो पै दया न बिसारियै॥२२॥ अथ ला
लजू की विरहातुर पत्री॥ कवहूं मनोज मत्त वारे गज
सौं वतुराइ आंसू के अगाध वारि पूरि पारियतु है॥
कबहूं उतंग अति धीरज महा गिरि के सिषर चढाइ
गहि भू मिडारियतु है॥ कबहूं दुसह दुष आगि में जरा
इ काहे न छवीली कंठ लाइ धारियतु है॥ दारुन वियो
गहरि नाइक के वसि परयौ आसा अहलाद पहला
दु मारियतु है॥२३॥ अथ लडैतीजू की पत्री॥ साल के
सिषर चढौ टेरत षरोई पिक दहन को जु दोइ मनगा
इयै॥ सारी रैन चंद्रमा सवल वहनायौ करै ऐसें ही अ
नेक कौन कौन धौं गनाइयै॥ जब तब आइ यह चाति
क हो रूषे रूष आवन की औधि यह कौलौं बहराइ
यै॥ काम के सिषे सब प्रान लै न आवतिहै कौंन हाथ
दीजै प्यारे लिषि करपठाइ है॥२४॥ अथ उपलंभ वर्न
३४ नं॥ दोहरा॥ पीतम के बिछुरे जहां सुषदाइक दुषमूल

नवमुखदेतउराहुनोंससिलागतविषसूल॥२५॥य
थालालजूकोबचन॥चंद्रमातें॥राधिकाकेआन
नपेवारेऐसेकोटिकोइकहीहमजानेंरिसहीयो
रिसभस्योहै॥नाहीतेंअनलसमताहीतेंवियोगप
रैदाहैकामसीपलैनराहहूतेंडस्योहै॥वारिदमें
बूड्योनमस्योनऊसुधाकेवलयद्यपिविनासीमा
रिषंडषंडकस्योहै॥कैसेंबचौऊधोएवृषभानकी
सुताविनुतोससीभयोसालकामदारुनपस्योहै
॥२६॥जोंजोंयहनीचऊचपदवीचढतजातत्योंत्यों
चितऊंचौह्वैकेनीचगतिदेतुहै॥कोऊएकतेजतें
बचाइकैजराइबेकोंयाकेतेजपायेंतेंजुपावैमीन
केतुहै॥औरनिरसीलोरूपसीतलपियूषमईमो
सोंविपरीतहोतआलीकौनहेतुहै॥जानतिहोंपू
रबजनमकोहैबैरीकोऊसोईअबचंद्रमाह्वैवाही
बैरलेतुहै॥२७॥यथालडैतीजूकोउपलंभवचन
चंद्रमाप्रें॥पीतमदेसवसेतजिप्रेमरसीलोनयातें
कलंकुहैतीको॥पीरअधीरसहेनिसिबासरतातें
नआवतलालचुजीको॥तूंदिजराजअनराइनिको
मनसीतेंनऔरकोऊसुरनीकौ॥कामपिशाचतें
मेरोबचाउजोहोइनोतोहिवडोजसुटीको॥२८॥
सबहीकोंसांचोभैयालागतजगतजैसेंग्यानीकों

मृषाहैजाकैंग्यानकोबिचारुहै॥तैसेंईभ्रमसोंयाहि
माननरसीलेसबसीतलसरूपमहासुधाहीकोसा
रुहै॥सेसकेसहसमुषल्लालीजेगिरतज्यालीफेंन
ह्वैकैजम्यौनिनताहीकोविकारुहै॥दीजनिहैडारि
ससीनामधरिसागरतेंनबसुषसोंपाएसेषसाईक
रतारहै॥१९॥अथकरुनानामवियोगश्रृंगारवर्णनं
॥दोहरा॥दीनबचनमेलेबदनअपनीबियासुनाइ
॥औरहिदयाउपाजियेकरुणानाहिवनाइ॥२०॥
यथालालजूकौकरुणाश्रृंगार॥कामकरेनिनकोटकचोट॥॥बिछुरेंतिहारेंप्यारीजानिकेंअकेलो
मोहिबैरुपर्योकाममारिबेकोप्रानलीनोहै॥जार
तिदुसहज्वालरैंनिदिनजानमनिसोंवेधिवेधिप्रान
निदुसहदुषदीनोहै॥आवतिअवधिआसरह्यो
उसाससनुनिघट्यौहैनिषंगसवभयाव्रतुहीनो
है॥सषारितुआजुआनिकीनीहैसहाययातेंफू
लनिफुलाइबनबानमईकीनोहै॥२१॥यथाला
लडैतीजूकरुणाश्रृंगार॥कामकरेनिनकोटकचोट
सहैजियराहठमानघनेरो॥हैंदुषमानमईकलं
कानिरसीलीउपाइमिलागततेरो॥एतोकरुपैअ
पनेअपनैपनमैंरनषेनकियोतूनुमेरो॥मीचदय
तेंसुवीचिकरैरीतोनीचदुहूनिकेहोइनिवेरो॥
३५

॥२२॥ दोहरा॥ यह प्रवासशृंगार रस सूछम दियौ
सुनाइ॥ और भांतिहूं कहति हैं जे पंडित कबिराइ
॥२३॥ इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भवनंद
लाल तस्यात्मज रसिकराइ तत्पुत्र श्रीरसालेमि
श्र विरचिते रससागरे प्रवासशृंगार वर्णनो नाम त्र
योदशोध्याय:॥१३॥ अथ हास्यशृंगार वर्णनं॥ दोह
रा॥ उत्तम मध्यम अधम बस होत भेद तैं हास॥ उत्त
म के स्मृत हसत हैं मध्यम विहंस उपहास॥१॥ अध
मनि के अति हंसति हैं॥ पुनि अतिहसति बषान॥
अपमांह और ओरु भेदो कविधि कौ जान॥२॥ अथ
उत्तम बस स्मृति व[illegible]नं॥ नैन कपोल अधर दसन
बिगसहि कछुक सुभाइ॥ स्मृत हांस तासौं कहत हां
सी लषी न जाइ॥३॥ यथा लडैतीजू कौ बचन॥ मुग्धा
॥ साची कहौ बलि जाउं मैं तू मुसिक्यानि ही मैं पहिचा
नि जनावै॥ काहू की नाई जु हौं हूं करौं तौ रसीलैं सुभा
इ सौं कुंजवतावै॥ तूं इनि बातनि मे बड नागर मोहि न
सूधें हूं बोलि न आवै॥ कौन कहावति है रसरीति ब
सै कि हिंठौर सु कौन कौं भावै॥४॥ उत्तम बस हसित
शृंगार बर्णनं॥ दोहरा॥ विकसहि चारु कपोल जहं
सबद स्वास नहि होइ॥ बदन प्रफुल्लित कुसम जौं हंस
ति कहत सब कोइ॥५॥ यथा लडैतीजू कौ हासशृंगार॥

वनितावनीवानिकजेजगमेंजिनकीगुनकीरतिलो
कलसी॥तिनकीसमताकरिवेकहुंसोतिनकीसुधि
मोहियआनिवसी॥कुचईसगहेंकरसोंहकरोंवत
रानिवहेमुषतेंनिकसी॥सुनियेंपियबोलिरसीलो
तियारिसछाडिसबैसुषमानिहंसी॥६॥अथमध्य
मवसविहतिश्रृंगारवर्णनं॥दोहरा॥समयपाइहंसि
येजहांमुषमोरनदुतिजाल॥होठमिलेधुनिहोइज
हांविहसितकहतरसाल॥७॥यथालडैतीजूकीस
षीकोवचन॥वादिनतोललनासोंकछूविहसेमुसि
क्यानिकीरीतिलई॥पहिलेंतियकोतनुकुंदनसोंसु
षलाइकियोजिनआपमई॥बहुरोंतजिभाजिगयौ
कितहूंजबहीविरहानलआंचमई॥अवतोघनचो
टैसहैललनानितकामसुनारकेहाथभई॥८॥अ
थमध्यमवसउपहसितश्रृंगारवर्णनं॥दोहरा॥फूल
हिंनासापुटजहांकुटिलदृष्टिगतिध्यान॥अधिकहं
सतिधुनिहोइजहांसोउपहसितवषान॥९॥यथा
लडैतीजू॥अलवेलपनेकेसुभाइमिलेबहुभांतिहं
सेंअतिषेलरचावै॥चोंपदिवाइकेदाइवदेरूपकें
नकहूंपलसोंटगुलावै॥पीवतरूपरसीलोपियाको

लषेसजनीनौहसोंइछिपावै॥श्रीवृषभानकुमारहि
पीतसोंनंदललाकौबिलोकिबोभावै॥११॥अथ
मध्यमवस्थअपहसितश्रृंगारवर्णनं॥दोहरा॥अधि
कसबदकंपतवदनचुवतनैननतेंनीर॥यहअपहसि
तकहावईबरनसुनावतधीर॥१२॥अथलडैतीको
वचन॥वारवधूमुषदेषिषिरैबिहसैमिलिकैंकुल
बालवधूकहि॥नाहकनूंदुषदेइगुसाइनिजोगमि
केनितहीनितचूचहि॥कुलटासंगनाचतगावतहैं
सुषमानसराहतनाहिहिनूकहि॥१२॥अथअधम
वस॥अतिहसितवर्णनं॥दोहरा॥सवदवहुतअसु
वांबहतकरतारीसिरचाल॥जेसमीपतेंभेटीयेअति
हांसीकोष्याल॥१३॥यथालडैतीजू॥दंपतिसौतिकी
देषिफिरेजरतीवरतीवरतीजरतीवरती॥मक्षमंगल
लैगयोबांहगहेंधनकुंजमेंजोतजहांबरती॥बहराइ
कैनाहिलएकरलौंडियाआइमिलेतहांगोचरती॥हं
सिलोटतऊचेसुनावतबोलिसोजोंजोंफिरेगिरतीप
रती॥१४॥दोहरा॥इहिविधिहासश्रृंगारकेदीनेभेद
सुनाइ॥वाकीजेरसरतनमैंदीनेंहमोजताइ॥१५॥॥
इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडीयेवंशोद्भवनंदलालतस्यात्म

जरसिकरायनन्दसुतश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरससागरेहासश्रृंगारभेदवर्णनोनामचतुर्दशस्तरंगः॥१४॥
अथषट्रितुविरहश्रृंगारवर्णनं॥दोहरा॥षट्रितुके जेभोगहैं पियविनुहोहिविरोध॥जहांसुहाइनसकलसुषरितुवियोगकोसोध॥१॥अथप्रथमरितुराजबसंतनैविरहवर्णनं॥माननसुवासधाइकुमनकदंबकुंजसुमनअसोकसोरसालहिरवतुहै॥पावनछबीलीछबिचंपककलीनिमधिदौरिमउरानिकलयीनहिववतुहै॥माध्करीसुरतिकरिचाहेरससाररसमैंप्यारीसहचरीजानिभालिकैनवतुहै॥नौननविलासरितुराजकोचहूंघांचाहिवनवनअलीमधुसूदनभवतुहै॥२॥कवित्त॥मदनकलाररितुराजकेप्रगटभएफूलेगिरिजेसेंफूल्योकाननलटोहूको॥लपटेंलतानिमंदगंधवाहअंधभयोठौरठौरबटपारीसारसनटोहूको॥रसकेरसीलेमोररेनुरंगेगुंजरतदौरेमनवारेपिकउचेह्वैरटोहूको॥कीजेनगवनप्यारेदेषोफुकिघूमतिसोंवोरोह्वैरिसालवटपारनबटोहूको॥३॥फूलेपलासरत्नरंगभासहिकेदगदाहकेकाननआगी॥अवलंबअवलंबकोकिलाकुहुकुहुवेणुसुनावन
३७ लागी॥लुंटकभवरसुमनरसलुहहिं--- --पवन

ठगठगी॥रितुराजबसंतउतपातसकलवनब
हुत्रमनधरपंथइकडगी॥४॥अथग्रीषमरितु
नैंबिरहश्रृंगारबर्ननं॥लालनुकेविछुरेसजनी
विधिहींयहऊलटरीतिरचीहैं॥एसीवढीविरहा
नलकीतपकीतपनीतेनकोऊबचीहै॥जोफ
केप्रतिबिंबपेरविकीछबिहूं॥तिकोटिसचीहै
॥पियग्रीषमतापनेंहोननचीसषीग्रीषममेरईना
पनचीहै॥५॥कवित्त॥चैतपलासकीसोंनरसा
लहैचैतपलासकीसोनरसालहै॥तापिकला
पिकलापिविलासकोकालहेतापिकलापिवि
लासकोकालहै॥चैतपलासकीसोनरसाल
हिंतापेंविलासकोकालहै॥चैतपलासकीसोंन कलापि
रसालहेतापिकलापविलासकोकालुहै॥ ॥॥
अथवर्षातेंवियोगश्रृंगारबर्णनं॥लडैतीजू॥
जानिसषारितुराजकौराजअनंगकसाईअनी
मिचलाई॥वाननिसोंतनवेधहनीअवलापति
हीनमहादुषदाई॥गीषमतीछननेंजकीतापतं
चाइभलेंबहुभांतिजराई॥घोरिघटाजलधारनि
सोंवरषारितुछारबहावनआई॥७॥कवित्त॥
लालजूकौ॥स्यामसरीरकेबानकतेंचपेरतमकी

ष्वनमंडलीलाई॥ सरससी नहि जाने घरे हानिहे
निह चे ऽगकामक साई॥ हों घनस्याम सबे सहि
हों वृषभान सुता की बडी कठिनाई॥ जाके महाम
षत्लसे कुंतलच्छाननमें द्विजराजनिकाई॥ ५॥
अथ दरसते बिरह श्रृंगार वर्णन॥ लडैतीजू॥ जि
नहीं तिन हीं सित वारिज हे प्रगटे मनों वासर भास
रहे॥ कुसमै षद ए बिरहानल दाह रमै ननमें सरसे
सरदे॥ किति भांति बचे सजनी ललना यह काल
समान भई सरदे॥ ९॥ कवित्त लालजू कौ॥ जोल
गि घान पिया मुष की छबि लै लै सुधामई गात बना
यौ॥ तौ लगि तूं ससि सी समयूष सुधानिधि लोग
नि माह कहायौ॥ ताके बियोग की दीन दसा भए
तेरो सबै गुन औगुन पायौ॥ बाडव संग तें तापक रे
है कहा भयौ जो सरदै रितु लायौ॥ १०॥ सारस वां
स सुहातल से सब ही सर मारन द सा वस॥ साल
स हंसन मैं मन मानहिं लै बरलारन मैं नन माह स
॥ सादर सादर वादर वानक के सर सार चले रज सों
रस॥ साधन साधन सा निधि सोभन चारु चकोर
मनें सरदे रस॥ ११॥ अथ हेमंत तें लडैतीजू कौ विर
३८ · ह श्रृंगार॥ हेस के अंसस हे स[redacted] विद्धंस के सीनसु

धूंसषुसंसरचावै॥ जामिनि कौजमभामिनिसीकरिकैं
मिनिसांसमान बढावै॥ सीरेसुभाइकैपाइजुडाइमहा
बिरहानल ताईजरावै॥ हेरतिकंतकोमीतबसंतपैअं
तकुमैतहिमंतसिषावै॥ २२॥ हेमंततेंलालजूकोविरह
श्रृंगार॥ सीतमयूषपियूषमईतऊडीठिनिहारकंपबढा
वै॥ लागतिनेकुसदागतिकेंतजिभीजनगातननागति
आवै॥ जोवनकीछुरनीतरुनीहरनीमनकीगललला
गिजिवावै॥ हौंसहुलाससहिंतूहियकोयहहाइहिमंत
हियोहहरावै॥ २३॥ अथशिशिरतेंलडैतीजूकौबिर
हश्रृंगार॥ दारुणहैसिसिरैसमयोयहसीतहिसीत
सोंप्रानहरैगो॥ आइमिल्यौनइहांपियज्योंसुनिका
ननतोदृगनीरभरैगो॥ आयोहैकामसोंपैजकियेंसु
हिमंतजोआलीनषालीपरैगो॥ लाइकैएसोसाइक
हैतोकहाऊतुनाइकआइकरैगो॥ २४॥ अथशिशि
रतेंलालजूकोविरहश्रृंगारबर्णनं॥ सिसरसमीरके
परसकीनपीरजाइआवैजोधनंतहूंआपुभयौबाइ
गी॥ चंदआनताईकीरसीलेसुषदाईजोइतोमेंप
रीभामिनीविलूलाज्योंबिलाइगी॥ पंचवानतानजा
नबूझकेअजानभईजाकेतापतायेंसुधाहूसोंनसि
राइगी॥ मेरीतोसहलहैपैमेरीसषीमाननीकेंकोंन
भांतिजाडेकीविभावरीविहाइगी॥ २५॥ एककवित्त

मेंषटूरितुवर्णनं॥ग्रीषमनतापतचैननमेंबरषाहगञ्जं सुनिकीअवलीहै॥पंकजपुंजपरीसरदैसितुनेनबढा दूरिमंतछलीहै॥पदवसेजकुहूगिरिलापवसंतजुटी है॥कामप्रभाइतैवाममेंआइछहूंरितुकीएरंगतीतिल ईहै॥२६॥दोहरा॥षटूरितुतेंश्रृंगाररसकह्योपेमकी रीति॥औरभांतिहूंकहतिहैरसिकभारतीमीत॥२७॥ ॥॥इतिश्रीमत्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भवनंदलालत स्यात्मजरसिकरायतत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्रविरचिते रससागरेषटूरितुवियोगश्रृंगारवर्ननोनामपंचदश स्तरंगः॥१५॥अथसाषावर्ननं॥दोहरा॥रसउपजा वतदुहूनिमेंनाइककेलगवार॥तिनकेभेदकहेंरसि कजिनकेबचनषिलार॥१॥पीठमर्दविटवर्नकेचेट ककहेंगनाइ॥औरविदूषकबर्नियेंचारोंदेहुगना इ॥२॥अथपीठमर्दनामसषावर्णनं॥दोहरा॥मान वतीकेमानकोंवाततनिदेइछिडाइ॥दंपतिमेंपीनहि करैपीठमर्दकोभाइ॥३॥यथामक्षमेंगलछंद॥मंग लीजांनिकेमंगलमोंहिलिलारचढाइगुसाइनिजो ली॥वानकआपुसुगंधसुभाइकेपूरतकुंकुमठो रनरोली॥दासमहारसकेरसियाहिरूचैकबहूंगु
३९ निमाननिबोली॥कामततंबोलीरसीलोगुपालहिं

नेरीयेभावेरीपानकीचोली॥४॥अथविटवर्णनं
॥दोहरा॥काम कलामेंचतुर अतिजानेंसकल
सुभाइ॥ताही कोंबिटकहत हैंजेपूरबकबिराइ॥
॥५॥यथाचतुरसषा॥कातिकमासकीपून्योब
डीतिथिभागिनितेंविधिजोगबनायो॥तोहिपुनी
तउदारबिचारिकेजाचककैद्विजनाइकआयो
॥मानमहाधनदीजियेदानजोचाहनकोटगुनो
फलुपायो॥वेमुषछाडिनमनावती अबयोंकहिमो
हनमोहपठायो॥६॥अथचेटकनामसषावर्णनं॥
दोहरा॥जोदंपतिमेंपरस्पर संगमरचेबनाइ॥सोई
चेटकजानियें सषासरससुषदाइ॥७॥यथासुबु
धनामसषा॥काननकीसुषमाजितहीतितकामस
षारितुराजबनाई॥देषतदेषतरीझिभईतरुसंपति
दंपतिडीठिसमाई॥प्यारीतिहारीमहासुकुमारिवि
हारतेंहारीसीमेंलषिपाई॥कुंजकेभीतरबानकदे
षसराहिहोंआपुनेचेटकीचतुराई॥८॥अथविदू
षकवर्णनं॥दोहरा॥करेठठोलीहासकरिदंपतिकौ
सुषदेइ॥वहेबिदूषकजानियेंकापहरतजसुलेइ॥
९॥यथामानानामसषा॥वेरतिनायककेगुनकी
गुरलीजबवेदरचाइरचैगी॥मानिमहाविषसीकु
मकानिबिदेहभईगतिदेहषचैगी॥चंदनचारुसुधा

घनसारु बिकार निहारत डीठि षचैगी ॥ तैसो मुनी
सुर जो ब्रज मैं तुन को ऊगुवारि की नारि बचैगी ॥
॥१०॥ इति श्रीमत्सारस्वत कुमडिये वंशोद्भव नंद
लाल तस्यात्मज रसिकराय तत्पुत्र श्रीरसीले मिश्र
बिरचिते रससागरे सषाभेद बर्णनो नाम षोडशा
स्तरंगः ॥१६॥ अथ नायक भेद कथनं ॥ दोहरा ॥
नाइक ग्रंथनि में कह्यौ अधिकारी रस मूल ॥ जि
हि को आलंबन करों तुम हिंडोरे झूल ॥१॥ मानी त्या
गी तरुन बुध सुंदर धनी उदार ॥ छमावंत सुरुचि कु
समसाहस तेज षचार ॥२॥ ज्ञानी दछ विनीत सुर
म क्रकुरु कुली कुवैंन ॥ षयनेज स्वीसूर हद मति उ
त्साह सु चैंन ॥३॥ विद्यालोचन धर्मरत्ति स्मृति मेधा
अभिमान ॥ इत्यादिक गुन जु गति जो सो नाइक क
रि जान ॥४॥ सोरठा ॥ सो नाइक हैं तीनि ॥ पति उपप
ति वैशिक सहित ॥ जानत सकल प्रवीन ॥ अनुकूला
दिक भेद सों ॥५॥ अथ पति वर्णनं ॥ सोरठा ॥ जा सं
ग कियो विवाह ॥ ता सौं राचो पति कह्यौ ॥ सदा करै
निरबाह ॥ वहै सु संपति बिपति मैं ॥६॥ यथा लाल जू
बचन जसोमति के ॥ राधिका को नाम निसिबासु
र आराधें रहैं राधिका को रूप पयपान को सो सा
है ॥ औरन सुहात ढिग आपु ने ई हाथ माई भूषन

सुधारिरचैंसोलहसिंगारुहै॥ जपतनपनीरथनिगम निधिराधिवेकीराधिकासौंलोकपरलोककोवि चारुहै॥ जादिनतेंगोनेंआनीनादिनातेंऐसीरी तिलालजूकेराधिकाईजीवनअधारुहै॥७॥ अथ उपपतिवर्णनं॥ दोहरा॥ परनारीसोंप्रीतजिहिंकीनी रसरतिमान॥ नानारीसोंकामतेंनायकउपपति जांन॥८॥ यथालालजूवचनसखीके॥ पत्रहरेलिषि सौंनेकेआंकनिकाल्हिकहूंपठईतुमचीठी॥ हाथ परीवहऔरकेजाइहुतीवहबीचिगवारिबसीठी॥ नाहिनिहौरिमहाछलसोंउनभांवतीलीनीकही मुषतुममीठी॥ जानिषवीनरसीलेकहोइनवातनि केसंनिवाहिबीईठी॥९॥ अथवैशिकनामनायक वर्णनं॥ दोहरा॥ जोगनिकाकेरसविषैनाकौवै शिकनांउ॥ उत्तममध्यमअधमकहितीनिभेदक हिगाउ॥१०॥ यथमवैशिककोउदाहरन॥ लालजूके बचन॥ आछीछविआननकीसरदजुन्हाईमानौं आंगअंगदीपतिलुनाईसोंविसेषियै॥ जाकेनैनबा ननिसोंजीततिअनंगजगतुगमनजियहोतपेंप्थ मगुदेषियै॥ जाकेहाइभाइकैसुभाइमैंविकाइम नरसमंगकारीलाजनैकहूनपेषियै॥ कंठलागेमा लासीअनूपरूपसालासीविमोहैमनहालासीसु

वारवालादेषिये॥ ११॥ अथ उत्तम वैशिक वर्णनं॥
दोहरा॥ वारिनारिकौ कोपलषि करै उपाइ वनाइ॥
मान छुडावै लांचु दै यह उत्तम कौ भाइ॥ १२॥ यथा ला
लजू के वचन॥ भीषम भुजंग संग दूषनि है॥ अंगजा
कें कै सें वह चंदन प्रमोद हिरचाइ है॥ सीतलसरो
रुह पै तीछन किरन भीत सारघनसारु न घरी कु
ठहराइ है॥ अहो मृगनैनी मोपै दयातैं सिधाई यह
मोतिनि की दाम अनि सीतल सुभाइ है॥ लागति है
पाइनै कु देषिये प्रभाव याको छाती सों लगायें को
टताप मिटि जाइ है॥ १३॥ अथ मध्यम वैशिक नाय
क वर्णनं॥ दोहरा॥ गनिका मानि तीलषें गुपत करै
निज भाइ॥ वाके चित हू की सबै जिय में देत लषाइ
॥१४॥ यथा लालजू के वचन सषी सों॥ पहिलें उहि
चंद्रमुषी रुष रूष विलोक्यौ री मोहि तो भीत भई॥
निसि केलि कला रति कौतुग मैं विधि ना अव नौर
स हानि दई॥ हित की हिलगी लषि प्रान पिया पिय
दीन दसा जिय जानि गई॥ अपनी सजनी सों कछु
मुसिक्याइ के नो हिलला चित दै चित ई॥ १५॥ अथ
अधम वैशिक वर्णनं॥ दोहरा॥ भय डर दत्र जा को
४१ पकें गनिका लै अपनाइ॥ भली वुरी समुझै न ही

वैशिकअधमसुभाइ॥२६॥यथा॥लालजूबचनगति
काके॥चितकोपगहैंमुषरूषीकहींनवमोंनगहौ
नकहूंबिरमै॥जिनिबाततितैंअंगअंगतपैफिरिबे
करियैनितहीसुषमैं॥लवलेसनहीकरुनाभयको
परसैनहिलाजकहूंजियमैं॥रतिअधमयौजितही
तितडोलैसनेहकेतासोंफसीविसमैं॥२७॥अथवै
शिकनायकभेदवर्णनं॥दोहरा॥सठमानीअरुच
तुरपुनिएवैशिकके भेद॥पतिउपपतिहूंमैसदावर
नतहैरसवेद॥२८॥अथसठवैशिकवर्णनं॥सोर
ठा॥सदाकरैअपराध॥कपटीबचनमधुरकहै॥
आपस्वावकोसाध॥सठपरमनवंचेरहै॥२९॥य
थालडैतीजूकोबचन॥इकनानूंछडीत्ताइमेन्त
दाघिरेमुरलीरूपदालुभाणाहोरयादकरेदाई॥
इकसणमाणियांवेरोइरोइकित्तीभांतिरतीराती
होरसंगजिन्हानूंभवेंदाई॥एडाहोइनितहालछ
डुहानकुडाष्यालमुठावेनआषैपवैंजेहेदुष्य
दुष्यदेदाई॥आषणरसीलेवलहोदावत्तकाल।
सप्पनीवत्तादेगलेकप्पयापरूप्पलेदाई॥३०॥
अथमानीवैशिकवर्णनं॥दोहरा॥जोमनभावैसो
करैतापैराषैमान॥बहुरमनीमोहीरहैमानीवै-
शिकजान॥३१॥यथालडैतीजूकीसषीकोवच

न॥ सौतिहसीदुषमानिन्तियाउनजोपैकहीकह
नावतिरूषी॥ ज्ञातुरसीलेकलानिधिहोतियसोंठ
कुराइतकैतुमदूषी॥ सोचऊधोअपनीकरनीसर
सीछतियांसरसीदविदूषी॥ लेहुहियोहुलसाइअवे
वलिप्यारीनिहारेसनेहकीमूषी॥ २२॥ अथचतुरवै
शिकवर्णनं॥ दोहरा॥ वहुरिमनीरंजनसदाविद्याक
लानिधान॥ काहूकोंदूषैनहीनाइकचतुरसुजान॥
॥२३॥ यथा॥ नैडैनीजुकौमएकरतारपुकारकहोइक
वारयहैविनतीसुनिकानै॥ नंदकुमारजियोजुगचार
पैऔरप्रकारकेलेसनमानै॥ डोलतिहैउमह्योहम
कोंवसिकैनिरदैनकहूमनआनै॥ एसोजुआपक
हूवसिहोइतोपीरपरैपरपीरनोजानै॥ २४॥ दोहरा
॥ पतिउपपतिपुनिकहिमैंवचनलहैपुनिरुक्ति॥
तातैंहमवेनहिकहेंवैशिकपतिकीजुक्ति॥ २५॥ इ
हिविधिनाइकुभेदहमदीनेंभेदजनाइ॥ अन्यग्रं
थमैंऔरविधितिनहूंकहूगनाइ॥ २६॥ इतिश्रीम
त्सारस्वतकुमडियेवंशोद्भवनंदलालनस्यात्मज
रसिकराइनत्पुत्रश्रीरसीलेमिश्रविरचितेरस
सागरेनायकभेदवर्णनोनामसप्तदशस्तरंगः॥
४२ ॥ ॥ अथपुनिरपिनायकभेदकथनं॥ सोरठा॥

सोनायकअनुकूल॥दछिनसठअरुधृष्टकहु॥ए
चारौंरसमूल॥तिनिकेभेदनिहौंकहौं॥२॥अथअनु
कूलनायकवर्णनं॥दोहा॥एकनारिसौंरतिसदाज
सविद्यागुनमूल॥छुधावंतसुचिमधुरसुरसोनाय
कअनुकूल॥२॥यथालालजूकीसषीकेवचन॥
लडैतीजूकेंआगैं॥बांसुरीबजाइकाहूमंदमुसि
क्याइकाहूनेननिरषाइकाहूरूपदिषराइकै॥
अंतरहिलाइकैरसीलेहाइभाइतिसौंनितनशति
नौतनअनंगरंगबढाइकै॥आंदजीआनेकनिसोंभा
वतिहीभांवरीसोसुपनेकीसंपतिसीकीनीहैलुभा
इकै॥तेरीसोंरीमेरेलालनेरेरसावीथ्योआलीमोर
जोवसंतमेंवसंतदूतीपाइकै॥३॥अथदछिनना
यकबर्णनं॥दोहरा॥सुंदरधुनीनिवहनीगतीनीप
रमउदार॥बहुरिमनीरंजनसदादछिननसबरससा
र॥४॥यथालालजूकौरासवर्णनं॥वंसीनादकोपी
लाजलोपीरतिसोषीरूपओपीगोपीचौपीठारे
रोपीभुजदंडलै॥गतिनिकीरीतिसोंसंगीतके
सुभाररचिनावतरचाइगतिदंडवअषंडलै॥दर
सपरसकौपीयूषतेंसरसरूपमेटनबरसमारना
पमारतंडलै॥सारदसुधाकरकेपाइपूरेमंडलै

बिराजैब्रजमंडनबनाइरासमंडलै॥५॥अथसठ
नायकवर्णनं॥सोरठा॥सदाकरैअपराध॥क
पटीबचनमधुरकहै॥आपस्वावकौसाधसठपर
मनवंचैरहै॥६॥यथालडैतीजकौबचन॥लाल
जूसौं॥मरममरममपैठिसबहीकेभेदपावैकाहूनल
षावैभेदप्यारेनैरेघटको॥अरबषरबकाजसाध
तसरवविधिनऊनगरवकरैसेवकजोनटको॥
आवतनडीठिकैबसीठईठबसकारीलावतनपी
ठछलललवलजैसोनटको॥याहीतेंनभाष्योकहूं
निधिज्यौंदुराइराष्यौजान्यौमैंरसीलेभाइरावरे
कपटको॥७॥अथधृष्टनामकथनं॥दोहरा॥भू
षनबसनचटककिरैंसेकैकोभीनैगात॥बहुअ
पराधीबचनठगवैहैधृष्टकीजाति॥८॥यथालडै
तीजकौबचनसषीसौं॥औरकेकाजमेंडारति
आगिसीआपुनेकाजकोंपांइपलोटै॥नैननचा
इहिलाइषिलाइसतावैंनइहसावनकामकीचो
टैं॥दीजियेकादिकरैजोहितूगनछाडैनऊनछ
लीछलषोटैं॥पूछिसबैगुनमोहिगुसाइनितूनहीं
जाननिनंदकेंढोटैं॥९॥दोहरा॥इहिविधिचारिष

कारकै नाइक कह्यौ बषान॥ धीरललित द्वै भेद पुनि कहत रसीले जान॥२०॥ अथ धीरनाइकवर्णनं॥
दोहा॥ गनैं न संपति बिपति कों बोलै बचन नदीन॥ धीरज सहित सुधीर सों कामी विद्यालीन॥२१॥ यथा
लडैतीजू कौ बचन बसंत प्रति॥ दछिन कहावै नीरैं धीर धरैं आवै सीरै सील हि दिषावै सुरसीलो सब
जेतु कौ॥ वासुदे लुभावै साधसंगत जनावै एसरीन्न हिलषावै हौतपीतम अनत कौ॥ पाछैनिमरमपैठि
भेदत मरम ऐसें करत करम पूरो अधरम तेनु कौ॥ मीच कौ सोनाती काम बैरी को सघाती यह बडोई
बिसासी घाती मारुन बसंत है॥२२॥ यथा॥ फूलि फूलि फूलि रह्यौ चहूं ओर घोररूप दाइब नैं साषी हि
यौ हेरत हिरायौ है॥ ना रहूं मैं सरस सरीर मैं समीर रमैं सारतें सरस सार सार समैं पायौ है॥ कुहू की ह
कपनि सों काम पुकारनि सों धीर धरैं आयातें धीरजु पायो है॥ कैसें बचै आली ब्रजबाल इहिं काल सौंमें
मधरिपु दूरि आली मधरिपु आयो है॥२३॥ अथ ललित नायक वर्णनं॥ दोहरा॥ ललित पुरुष चिंता र
हित कोमल प्रकृति उदार॥ कला जुक्ति सुषिया घनी चित्र बनावनहार॥२४॥ यथा लडैतीजू की सषी कौ
बचन॥ चंदन चकोर कों सार समोर कौं दाडिमकीर

कों हंस मृलाणी॥ जों चकवाकों सिवार सुधाकों भुजंग विहंग। कों दिव कीलाली॥ एसें ही और रचे विधि की विधि जंतु कुचीलनि कों हित आली॥ प्यारी के गात अनूपम ज्ञान रसीलो रचौ विधि ने बनमाली॥
॥२५॥ यथा॥ उज्जल फूल कछू छबि काननमें कुंडल हैं इंदीबर ही तें वर आनन दिआवनो॥ मंजुल पुहप दलल गै बनमाला आछी पीत पटु धारें कल कंठ बैं नगावनो॥ मोर को मुकट सिर चित्रित अनेक रंग गात सरीर गिरि धातु छबि छावनो॥ राधा सों रुचिर रुचिमान नर सीलै माइ देषि आली माधव सों माधव सुहावनो॥२६॥ अथ उत्तम नायक बर्णनं॥ दोहरा॥ जाको जस जग में प्रगट विद्या कला प्रवीन॥ स्वर्ग मुक्ति सों प्रीति तिन पउत्तम के आधीन॥२७॥ अथ वेदी जनाः कुलजा या वर्नने॥ छप्पै॥ सव हिंदर सलतान षान जिमन हलन गावहि॥ डंडभरैं नृप सूर त्रास तें सी सति वावहि॥ देहि दान बहुल हसु तो महिमंडल किज्जे॥ साहस भामें प्रगट कासति सउप्पम दिज्जे॥ भणि कबिराइ सु विमल मति पिष्प बदन दुर्ज्जन उरै॥ कुमडि ये वंस में जाणियैं सु बदल सर नर को करै॥२८॥ विमल वुद्धि कुल सुद्ध कुधकर डुवन विहंडी
४४ या॥ भेय भेय वित्थरियं दान द्विज मंडल मंडीया॥ चाप

सापकरदुवनदुनियद्विजराजविराजै॥ द्विनिम
लकुलकोकिलरादरसदेषेंदुषभीजै॥ कुमडियो
करनजदुनाथम भणिमूलराजनंदनबलीय॥ ऊ
बलगिवतापससिसूरकोसुनंदलालकीरतच
लीय॥ १९॥ कलिकुमेरकुमडियोमिश्रममूबरदा
इक॥ गोतमगर्गवसिष्टवेदविद्यासबलाइक॥
रायहुमननमन्त्रिथैं सभासोह नउजियागरारसक
राइतनविमलकित्तकलमहिवुधसागर॥ नंदला
लवंसकविराजभणिमहिमंडलविख्यातकिय॥
द्विजदानमानऋमरभरैसुपरमपुनीतपवित्र
हिय॥ २०॥ अथअधमनाइकवर्णनं॥ दोहरा॥
जाहिनडरपरलोककोगुरुकुलकीनहिलाज॥
बुरीबातसमुझैभलीअधमकामसोकाज॥ २१॥
यथाधमनकोउदाहरन॥ जोरीकेजोरजवालस
हैनितपूतकेदूतसेवोलोसोरत्रा॥ हारनमानत
कामसोंहाडगरेमैंफिरैजैसेमंगलमत्रा॥ दा
सीदासभयौरतिप्यासकेजीभकेस्वादबनावे
कुपत्रा॥ एकरनूतकरैमनचंवलफेरिसभामें
कहावेसुपत्रा॥ यथा॥ धरमनजानेंसदाजानेंप
रधनहीकों ज्ञानेंपरलोकनाहिजानेंलोकति
यको॥ नाकेंतीयाछातीछातीभरीरहेकातिनि

सोंकुलठोरजोंडोलैनामधरैंवोलैसियकौं॥मानें
सुषसांचेयुअनुसांचेनाहिमानेंनाहिलेंपटलवार
फिरैंवोडेधियकौं॥ऐसेमनकुटिलकलंकीफि
रेंनगरीमेंलोचनमिलाइफूठेंफूठेंपरजियकौं॥२३॥
दोहरा॥नाइककेजेभेदषे तेपुनिकहेजनाइ॥इन
हीतेंसबनाइकासोहैरससुषदाइ॥२४॥ ॥ ॥
इतिश्रीमत्सारस्वतकुलउदियेवंशोद्भवनंदलाल
तस्यात्मजरसिकरायतत्सुतश्रीरसीलेमिश्रवि
रचितेरससागरेनायकभेदवर्णनोनामअष्टाद
शस्तरंगः॥१८॥अथहहारदोहरे॥रूपरोपपीरी
परैरूपीपरीपरपोर॥रोपैपैरिपुरारिपुरिपुरिया
रीरोर॥१॥कालकालिकाकलकलीकोकिल
कीकुलकीक॥कुलकलंककीकेलिकोलुकु
लोककीलीक॥२॥सूरेसीरेसरससीसरसी
सारससीर॥सूरसेससरसोंसरससूसैरसेस
रीर॥३॥धीरधुराधारैधुरीराधेरारोरारि॥धीरा
धररूयेधराधारधृंधरीधार॥४॥कनकक
नूकाकोकनोनीकोकाननकोन॥नाकनेन
कीनेंनिकेकनककीनककनोन॥५॥होंहेरो
हरिहारिरीहरेंहरेंहरिहारि॥हाहाहोहिहरि
हीरहीं ॥सर्वतोभद्रकवित्त

वर्णनं॥ दोहरा॥ जित मन होतिन वाचियैपूरो होइकवित्त॥ वहै अरथ मासै सदा मोहै सुनते चित्त॥ १॥ यथा मनुष्यकों समुझावना॥ लीनमया निन चाखि विषै रस मैन सजे करि मान लहा दुषु॥ हीन मया मित नाखि सिषै पसु एन रजे परि ध्यान दहा दुषु॥ छीन कया वित साखि दिषै त्रस वैन तजे धरि ग्यान गहा चुषु॥ दीन दया हित राषि मिषै यूस नैन भजे हरि ध्यान महा सुषु॥ ८॥ यथा चक्रमू॥

लीन	मया	निन	चाखि	विषै	रस	मैन	सजें	करि	मान	लहा	दुषु।
हीन	मया	मित	नाखि	सिषै	पस	एन	रजे	परि	ध्यान	दहा	दुषु
छीन	कया	वित	साखि	दिषै	त्रस	वैन	तजे	मरि	ज्ञान	गहा	चुषु
दीन	दया	हित	राषि	मिषै	यस	नैन	भजे	हरि	ध्यान	महा	सुषु

अथ कामधेनु जात वर्णनं॥ दोहरा॥ जेती मन की कामना तेते होंहि कवित्त॥ भांति भांति के अर्थ जुत सुनहु रसीले मित्त॥ यथा नोलसाह केयो ना हरीदास ताकौ कवित्त॥ मनहरन छंद॥ दीने दान दए दयाधर मते पूरे करे मान वैसु वस भाव भरे सुषरास

जू॥ वासौ वास रस सार सो हित रमा दाता फलै जा
नि केस हस दाव हरै रुष भास जू॥ भायो राज
सभा समैं भर तके तेजो भरे राज तेसु जस मा ह
कियो परगास जू॥ मान्यो नीत हिते मयान वल
के वंसे धरें साज तें रस सजियो हर हास जू॥ ॥॥
यथा चक्र मन हरा छंद॥

दीनें	दान	दए	दया	धर	मनें	पूरे	करै	मन	वेस	रस	भाव	भरे	सुष	रास	जू
वासे	वास	रसा	रसो	हित	रमा	दाता	फले	जान	केस	हस	दाव	हरे	रुष	भास	जू
भायो	राज	सभा	समैं	भर	तके	तेजो	भरे	राज	तेसु	जसु	समा	हकि	योप	रगा	स
मान्यो	नीत	हिते	मया	नव	लके	वंसे	धरे	साज	तेस	रस	सार	जियो	हर	हास	जू

अथ कवि को आभिप्राय वर्ननं॥ कवित्त॥ गाएउ
रुषोत्तम अधिक पुरुषारथ के मेरे बर स्वारथ कौ
पौरुष निहारियै॥ धार्यो गिरिराज ऐसें धारो क
विनाई मेरी लाज जग काज मेरे आपु न ही धारियै
॥ संपति के भोगनि मैं तेरो ई भरोसो राषों विपन
निवारिबे कों और कों संभारियै॥ गादि के गरभ
पर्यो द्रोणारि गहाय कर्यौ भगत परीछित जो मो
हू कौं उबारियै॥ १२॥ आठों जाम यहै काम यहै
४६ धन धाम मेरें रावरेई नाम निसों रसना रचाइयै॥

कहूं सोंन है [illegible] मूलिहू न रूषो भाषो लोभ अ
भिलाषो नाहि हियैं नतचाइये॥ तेरेई चरण हियें
राषत रसीले ज्ञान आपदा हरनकाज्ञं रीझनपचा
इयै॥ जगके गुसाई तुम अनि सुषदाई मो हिया क
लिकसाई की हैंसाई तें बचाइयै॥ २३॥ दोहरा॥ यह
रससागर ग्रंथ है कविताई को सारु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
और [illegible] करे आपदातें रछा करी संपति
[illegible] भांतिदा [illegible] सुषदाई है॥ पूत भए दूत भए भैया
[illegible] जे [illegible] धरै तेसे कहां लों गनाइये॥ प
रम उदार ह्वै सुधारे काम सबही के सुनि होरसीले
जहां अंत [illegible] न पाइये॥ हम तोइतनीयै नाथ विनती
के मा गति [illegible] या कलिकसाई की हैंसाइतें बचाइ
यै॥ २३॥ यहरससागर ग्रंथ है कविताई कौ सारु॥
या के पढिबे तें धरम अर्थ काम ब्योहार॥ ग्रंथ सुग
मसाधक अधिक जामें जुक्ति नवीन॥ पढिवें की
नो सहल है सुनें होत परबीन॥ २५॥ हाथ जोरि वि
नती करों सुनो श्रवण दे मीत॥ बिनु समुझें हँसियो
मती कविताई की रीति॥ २६॥ सोरठा॥ देवी दीजे
दान॥ विमल भारती विमल मति मे रोय हैं सयान
॥ जुतेरे चरननि चितरहै॥ २७॥ ॥ ॥ ॥ इति श्री मत्सा

रस्वत कु मडियेवं शोङ्ग ।नेद्दलहितरस्यात्मज ऽस
कं रायन त्पुत्र श्रीरसीलेमिश्राद्विरचिते रससागरे
कविच्छाभिप्राय वर्नेनोनामएकोनविंशो स्तरंगः॥
॥१९॥ समाप्तं रससागरनाम पुस्तके ॥ श्रीरामजी